A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 19 जुलाई , 2026

सुबह सवेरे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 287, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

पहाड़ों की रानी मसूरी

फोटो: गिरीश शर्मा

सुप्रभात

बारिश की स्मृतियों में
कागज की एक नाव भी है

क्या अब भी बच्चे बनाते हैं
कागज की नाव ?

फिर उसे चलते , डगमगाते
और डूबते हुए देखते हैं
क्या अब भी बच्चे
फिर - फिर बनाते हैं
कागज की नाव ?

- मणि मोहन

बड़ी उपलब्धि

पहले ही टेस्ट में कामयाब रहा विक्रम-1

● भारत का पहला प्राइवेट ऑर्बिटल रॉकेट लॉन्च ● 450 किमी ऊपर कक्षा में पहुंचा, पीएम मोदी ने फोन पर दी बधाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। हैदराबाद की स्काईरूट एयरोस्पेस ने शनिवार 18 जुलाई को भारत का पहला प्राइवेट ऑर्बिटल रॉकेट विक्रम-1 लॉन्च किया। यह टेस्ट पहले ही प्रयास में कामयाब रहा। विक्रम-1 को स्काईरूट ने ही तैयार किया और लॉन्चिंग भी खुद ही की। सिर्फ लॉन्चपैड इसरो का था। इसे आंध्र प्रदेश में श्रीहरिकोटा में इसरो के सतीश धवन स्पेस सेंटर से दोपहर 12.05 बजे लॉन्च किया गया। पहले यह लॉन्चिंग 11.30 बजे होनी थी, लेकिन 5 मिनट पहले काउंटडाउन रोक दिया गया। कुछ देर बाद इसे दोबारा शुरू किया गया। पीएम मोदी ने स्काईरूट के फाउंडर पवन कुमार चंदना को फोन करके बधाई दी है। कंपनी ने 2022 में विक्रम-एस सबऑर्बिटल रॉकेट लॉन्च किया था, जो 89.5 किमी की ऊंचाई तक गया था। अब विक्रम-1 450 किमी की पृथ्वी की सर्कुलर निचली कक्षा तक पहुंच गया है। इसे भारत के स्पेस सेक्टर के लिए बड़ी कामयाबी माना जा रहा है।

● **विक्रम-1 में पीएम मोदी का वंदे मातरम-** विक्रम-1 को हैदराबाद स्थित स्काईरूट एयरोस्पस ने विकसित किया है। मिशन आगमन को 450 किलोमीटर की लो अर्थ ऑर्बिट में 350 किलो तक के पेलोड को स्थापित करने के लिए डिजाइन किया गया है। स्काईरूट एयरोस्पस के मुताबिक इस पेलोड में वह खास पोस्टकार्ड भी शामिल है, जो पीएम मोदी ने मिशन की सफलता के कामना के साथ भेजा है। शनिवार को विक्रम-1 लॉन्च होने से पहले स्काईरूट एयरोस्पस ने पीएम मोदी के हाथ से लिखे संदेश वाला एक वीडियो शेयर करते हुए एक्स पर लिखा, विक्रम-1 टेस्ट फ्लाइट-1 पर भेजे जा रहे पेलोड में एक बहुत ही विशेष चीज है, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का हाथ से लिखा हुआ पोस्टकार्ड, जिस पर लिखा है- वंदे मातरम।

मिशन आगमन के उत्सव में लाखों शामिल

स्काईरूट एयरोस्पस के अनुसार पीएम मोदी के साथ मिशन आगमन में अनेकों हाथ से लिखे संदेश भेजे गए हैं। हाथ से लिखे इन संदेशों में स्काईरूट एयरोस्पस की टीम, इंवेस्टर, पॉलिसीमेकर और शुभचिंतकों के शुभकामना संदेश भी शामिल हैं, जो कि दुनिया भर से भेजे गए हैं। कंपनी के मुताबिक इस तरह से उसका मिशन आगमन एक उत्सव बन गया है, जिसमें लाखों लोग शामिल हैं। मिशन आगमन को हाथ से लिखकर शुभामनाएं दी।

भारतीय अंतरिक्ष यात्रा में ऐतिहासिक उपलब्धि

शनिवार को पीएम मोदी ने लॉन्चिंग से पहले किए गए एक एक्स पोस्ट में लिखा, भारत की अंतरिक्ष यात्रा में एक ऐतिहासिक नई उपलब्धि। सफल लॉन्च के लिए मेरी पूरी स्काईरूट एयरोस्पेस टीम को शुभकामनाएं। विक्रम-1 ऊंचाइयों को छुए, इतिहास बनाए और इनोवेटर्स की पीढ़ी को प्रेरित करे। मैं सभी भारतीयों विशेष रूप से अपने युवा मित्रों से अपील करता हूं कि वे इस ऐतिहासिक मिशन को फॉलो करें और टीम को बधाई दे।

कश्मीर पर प्रोपेगैंडा फैलाने की तैयारी में है पाकिस्तान

● यूरोप में भेजेगा दूत, सिंधु जल संधि पर भी लगा रहा जोर

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान एक बार कश्मीर मुद्दे पर प्रोपेगैंडा फैलाने की तैयारी कर रहा है। रिपोर्टों के मुताबिक, पाकिस्तान एक संसदीय प्रतिनिधिमंडल को ब्रिटेन और यूरोपीय देशों में भेजने की तैयारी कर रहा है, जो कश्मीर मुद्दे पर समर्थन हासिल करने की कोशिश करेगा। इसके तहत इन देशों के सांसदों, नीति-निर्माताओं, थिंक-टैंक और मीडिया संगठनों से बातचीत की जाएगी।

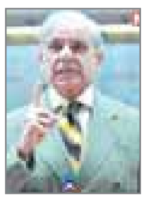

● **यूरोप में डेलीगेशन भेजेगा पाकिस्तान-** नून ने बैठक के दौरान बताया कि संसदीय समिति ब्रिटेन और यूरोपीय संघ का दौरा करने की योजना बना रही है ताकि वहां के सांसदों, नीति-निर्माताओं, थिंक टैंक, मीडिया प्रतिनिधियों और पाकिस्तानी व कश्मीरी समुदाय के लोगों का बातचीत की जा सके।

कॉकरोच पार्टी फाउंडर दीपके पर महिला ने स्याही फेंकी

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के जंतर-मंतर पर 21 दिन से भूख हड़ताल पर बैठे सोनम वांगचुक को पुलिस शनिवार सुबह सफदरजंग अस्पताल ले गई। इसके बाद कॉकरोच जनता पार्टी के फाउंडर अभिजीत दीपके ने भूख हड़ताल शुरू कर दी है। मंच से नीचे आकर बैठे दीपके पर महिला ने स्याही फेंकी। इससे पहले सुबह करीब 7 बजे पुलिस सिविल ड्रेस में जंतर-मंतर पहुंची थी और वांगचुक को सफेद चादर में उठाकर एंबुलेंस से अस्पताल भेजा। इस दौरान प्रदर्शनकारियों ने पुलिस का विरोध किया, जिससे वहां हंगामा हो गया। वांगचुक पेपर लीक मामले की जांच और शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग को लेकर अनशन कर रहे हैं। उनकी सेहत लगातार गिरती जा रही थी। उनका वजन करीब 9.5 किलो कम हो गया है। दरअसल दिल्ली हाईकोर्ट ने गुरुवार को केंद्र और दिल्ली सरकार को आदेश दिया था कि वांगचुक का रोजाना मेडिकल चेकअप किया जाए और जरूरत पड़ने पर उनका इलाज कराया जाए।

भूख हड़ताल पर बैठे हैं

वांगचुक को अनशन के 21वें दिन सुबह पुलिस ने अस्पताल भेजा

'निकल जान दो भाई, मत रोको' उज्जैन में पैदल घूम रहे थे सीएम

प्रोटोकॉल से परेशान लोग देखे तो इशारे से खुलवा दिया ट्रैफिक

उज्जैन (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 11 जुलाई को उज्जैन प्रवास पर थे। इस दौरान की उनकी एक वीडियो काफी चर्चा में है। प्रवास के दौरान सीएम बेहद अलग और सादगी भरे अंदाज में नजर आए। उन्होंने सिंहस्थ-2028 की तैयारियों के अंतर्गत चल रहे विभिन्न निर्माण कार्यों का जायजा लेने के लिए किसी लाव-लश्कर का इस्तेमाल नहीं किया, बल्कि वे खुद दोपहिया वाहन पर सवार होकर और पैदल चलकर सड़कों पर निकल पड़े।

सीएम ने उज्जैन के फ्रीगंज में निर्माणाधीन नए ओवरब्रिज और कोयला फाटक से लेकर कंठाल चौराहे तक चल रहे मार्ग चौड़ीकरण के कार्यों का बारीकी से अवलोकन किया। उन्होंने मौके पर मौजूद प्रशासनिक अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि जितने भी काम अधूरे हैं, उनकी गति बढ़ाई जाए और उन्हें समय पर पूरा किया जाए।

ट्रैफिक मत रोको, जाने दो

निरीक्षण के दौरान उज्जैन की सड़कों पर एक गजब वाकया देखने को मिला। जब सीएम पैदल मार्च करते हुए निर्माण कार्यों को देख रहे थे, तब स्थानीय पुलिसकर्मियों ने मुख्यमंत्री की सुरक्षा के मद्देनजर आम जनता का ट्रैफिक रोक दिया था। जैसे ही सीएम मोहन यादव की नजर रुके हुए ट्रैफिक और परेशान होते लोगों पर पड़ी, उन्होंने तुरंत पुलिसकर्मियों को टोकते हुए कहा, ट्रैफिक मत रोको भाई, जान दो, निकल जान दो। मुख्यमंत्री की इस संवेदनशीलता और वीआईपी कल्चर से दूरी बनाने वाले इस अंदाज की स्थानीय लोगों ने जमकर तारीफ की। दौरे के बीच मुख्यमंत्री आम जनता के बीच भी पहुंचे। फ्रीगंज और कोयला फाटक इलाके में निरीक्षण के दौरान उन्होंने स्थानीय लोगों के साथ बैठकर चाय पी और उनसे आत्मीय चर्चा की।

अभिषेक बनर्जी के ऑफिस पर चला शुभेंदु का बुलडोजर

● शेड के बाद सामने का हिस्सा भी तोड़ा, लगे जय श्रीराम के नारे

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल से बड़ी खबर आई है। टीएमसी के महासचिव अभिषेक बनर्जी के खिलाफ बंगाल सरकार का बुलडोजर ऐक्शन शुरू हो गया है। शनिवार को अमतला में बुलडोजर का इस्तेमाल करके अभिषेक बनर्जी के ऑफिस को गिराने का काम शुरू हो गया है। पूरे इलाके को पुलिस और केंद्रीय बलों ने घेर लिया है। मौके पर दमकल की गाड़ियां भी मौजूद हैं। वहीं कार्रवाई शुरू होते ही बीजेपी कार्यकर्ताओं ने जय श्री राम के नारे लग रहे हैं।

जानकारी के मुताबिक,जैसे ही अभिषेक बनर्जी के सांसद ऑफिस को तोड़ने का काम शुरू हुआ। इलाके में बीजेपी कार्यकर्ताओं और समर्थकों ने खुशी मनाई और जय श्री राम के नारे लगाए।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 20°c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 19 जुलाई 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

200 वर्षों में 68 फीसदी सिमट गई दिल्ली की यमुना

● बैराज-शहरीकरण बने मुख्य वजह, रिसर्च में बड़ा खुलासा ● पिछली एक सदी में 33 फीसदी फ्लडप्लेन नदी से कट गया

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली से होकर बहने वाली यमुना नदी पिछले 200 सालों में अपने मूल स्वरूप का बड़ा हिस्सा खो चुकी है। दिल्ली विश्वविद्यालय और भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल के शोधकर्ताओं द्वारा की गई रिसर्च में पता चला है कि यमुना की औसत चौड़ाई लगभग 68 प्रतिशत घट गई है, जबकि इसके डिस्चार्ज में 89 प्रतिशत की कमी आई है। शोधकर्ताओं का तर्क है कि कई बांधों, तटबंधों और नहरों के निर्माण के संचयी प्रभाव के कारण यमुना नदी का आकार इतना बढ़ गया है। जर्नल ऑफ जियोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया में प्रकाशित इस रिसर्च में दिल्ली के 50 किलोमीटर लंबे यमुना क्षेत्र में पिछले दो शताब्दियों के बदलावों का विश्लेषण किया गया।

● **658 मीटर से घटकर 210 मीटर रह गई चौड़ाई**– रिसर्च के अनुसार, साल 1799 में यमुना की औसत चौड़ाई लगभग 658 मीटर थी, जो अब घटकर करीब 210 मीटर रह गई है। इसी दौरान में नदी का अनुमानित जल प्रवाह करीब 30,000 घन मीटर प्रति सेकंड से घटकर लगभग 3,900 घन मीटर प्रति सेकंड रह गया। रिसर्चर ने पिछले 200 सालों में यमुना में आए इस बदलाव का मुख्य कारण बैराज, नहरें और शहरीकरण को बताया। जिसमें ताजेवाला, ओखला, वजीराबाद, आईटीओ और हथिनीकुंड बैराज, नहरों के निर्माण, तटबंधों और तेजी से बढ़ते शहरीकरण मुख्य कारण हैं।

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में नए कीर्तिमान गढ़ रहा भारत : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

देश के पहले प्रायवेट लांचिंग व्हीकल विक्रम-1 का कक्षीय प्रक्षेपण रहा सफल

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में भारत अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नवाचारों के साथ लगातार नए कीर्तिमान गढ़ रहा है। इसी क्रम में शनिवार की सुबह स्काई रूट एयरोस्पेस द्वारा तैयार किए गए देश के पहले निजी प्रक्षेपण यान (लांच व्हीकल) विक्रम-1 का पहला ऑर्बिटल लांचिंग सफल रहा। यह उपलब्धि नए भारत के दृढ़ संकल्प, युवा वैज्ञानिकों के नवाचार और देश की आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में इस अभूतपूर्व उपलब्धि के लिए अंतरिक्ष वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि यह सफलता वैश्विक अंतरिक्ष जगत में भारत की प्रतिष्ठा को और भी बढ़ाएगी। इस पहले प्रायवेट लांचिंग व्हीकल विक्रम-1 से ऑन डिमांड स्पेस लांचिंग सेवाओं को प्रोत्साहन मिलेगा।

नरोत्तम बोले- दूल्हा पीछे आ रहा, माला उसे पहनाओ

दतिया विधानसभा उपचुनाव में प्रचार के दौरान स्वागत के लिए पहुंचे थे कार्यकर्ता

दतिया (नप्र)। दतिया विधानसभा उपचुनाव के बीच राजनीतिक माहौल लगातार गर्माता जा रहा है। चुनाव प्रचार में नेताओं की सक्रियता के साथ उनके अंदाज भी चर्चा का विषय बने हुए हैं। इसी बीच भाजपा के चुनाव प्रचार के दौरान पूर्व गृह मंत्री एवं वरिष्ठ भाजपा नेता डॉ. नरोत्तम मिश्रा का एक अलग ही अंदाज देखने को मिला, जिसकी चर्चा पूरे शहर में हो रही है। वार्ड क्रमांक 14 और 19 के बाद वार्ड 6 और 7 में चुनाव प्रचार के दौरान डॉ. मिश्रा ने ऐसा संदेश दिया, जिसे पार्टी कार्यकर्ता संगठन को प्राथमिकता देने के रूप में देख रहे हैं।

अभी नहीं... दूल्हा पीछे आ रहा है

शुक्रवार शाम जैसे ही डॉ. नरोत्तम मिश्रा का काफिला वार्डों की गलियों में पहुंचा, भाजपा कार्यकर्ताओं और समर्थकों ने उनका जोरदार स्वागत किया। समर्थक उन्हें माला पहनाने और तिलक लगाने के लिए आगे बढ़े। इसी दौरान डॉ. मिश्रा मुस्कुराते हुए पीछे हट गए और मजाकिया अंदाज में कहा, अभी नहीं... अभी दूल्हा पीछे आ रहा है, माला उसे पहनाना। उनका इशारा भाजपा प्रत्याशी आशुतोष तिवारी की ओर था, जो उनके पीछे प्रचार में शामिल थे।

प्रत्याशी को दिया पूरा सम्मान

डॉ. मिश्रा ने अपने स्वागत को विनम्रता से टालते हुए कार्यकर्ताओं का ध्यान प्रत्याशी आशुतोष तिवारी की ओर मोड़ दिया। इसके बाद समर्थकों ने भाजपा प्रत्याशी का फूल-मालाओं से स्वागत किया। यह दृश्य वहां मौजूद लोगों के बीच चर्चा का विषय बन गया। आमतौर पर बड़े नेताओं का स्वागत पहले किया जाता है, लेकिन डॉ. मिश्रा ने स्वयं पीछे हटकर प्रत्याशी को प्राथमिकता दी।

राजनीतिक गलियारों में चर्चा

डॉ. नरोत्तम मिश्रा के इस अंदाज को लेकर राजनीतिक हलकों में अलग-अलग चर्चाएं शुरू हो गई हैं। कई लोग इसे संगठन और प्रत्याशी को प्राथमिकता देने का संदेश मान रहे हैं, जबकि समर्थकों ने इसे उनकी सादगी और कार्यशैली का उदाहरण बताया। हालांकि, यह राजनीतिक विश्लेषकों की व्याख्या है।

संक्षिप्त समाचार

पीओके में भारी हिंसा पर भड़का संयुक्त राष्ट्र

● पाक सरकार को दी चेतावनी कहा-हालात अच्छे नहीं

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में अशांति और आम लोगों के खिलाफ कार्रवाई ने संयुक्त राष्ट्र का ध्यान खींचा है। संयुक्त राष्ट्र की मानवाधिकार एजेंसी ने पीओके

की स्थिति पर चिंता जताई है। एजेंसी ने इलाके में होने वाले विधानसभा चुनावों से पहले प्रदर्शनकारियों और सुरक्षाकर्मियों की मौत की निष्पक्ष जांच सुनिश्चित करने पर जोर दिया है। 27 जुलाई को होने वाले चुनावों से पहले पीओके में तनाव बढ़ता जा रहा है। शुक्रवार को जिनेवा से जारी बयान में मानवाधिकारों के लिए संयुक्त राष्ट्र के उच्चायुक्त वोल्कर टर्क ने शांति बनाए रखने की अपील की है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, जून से अब तक हिंसा और अशांति में दर्जनों लोग मारे गए हैं। मारे गए लोगों में ज्यादातर प्रदर्शनकारी हैं।

बालू-गिट्टी के अवैध खेल पर सरकार की डिजिटल स्ट्राइक!

● बिहार में अब सीधे स्टोरेज सेंटर्स से ही कट पाएगा ई-चालान

पटना (एजेंसी)। बिहार सरकार ने अवैध खनन, खनिजों के अवैध परिवहन और भंडारण पर प्रभावी रोक लगाने के लिए नई व्यवस्था लागू कर दी है। खान एवं भूतत्व विभाग ने अधिसूचना जारी कर राज्य के सभी खनिज भंडारण अनुज्ञप्ति (स्टोरेज लाइसेंस) वाले स्थलों की जियो-फेंसिंग अनिवार्य कर दी है। विभाग का कहना है कि इससे हर

भंडारण स्थल की सटीक भौगोलिक पहचान दर्ज होगी और ई-चालान व्यवस्था को भी अधिक पारदर्शी बनाया जा सकेगा। नई व्यवस्था के अनुसार, लघु व्यवसायियों के लिए भंडारण स्थल की जियो-फेंसिंग कराना अनिवार्य होगा। वहीं मध्यम और वृहद व्यवसायियों को अपने भंडारण स्थल के साथ-साथ वहां स्थापित धर्मकांटा की भी जियो-फेंसिंग करानी होगी। इसके लिए संबंधित जिले के सहायक निदेशक, खनिज विकास पदाधिकारी अथवा खनन निरीक्षक स्थल का निरीक्षण करेंगे। वे भंडारण स्थल और धर्मकांटा के चारों कोनों का जीपीएस जांच करेंगे।

बारिश के लिए गधों को खिलाए गुलाब जामुन

प्रदेश के 44 जिलों में बारिश का अलर्ट, डिंडौरी-उमरिया में हेवी रेन की चेतावनी

भोपाल (नप्र)। भोपाल, इंदौर समेत मध्य प्रदेश के 44 जिलों में शनिवार को बारिश का अलर्ट है। इनमें से 2 जिले- डिंडौरी और उमरिया में भारी बारिश हो सकती है। मौसम केंद्र भोपाल के मुताबिक, 19 जुलाई से वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) एक्टिव हो रहा है। जिससे प्रदेश में अब लगातार तेज बारिश का दौर बना रहेगा।

प्रदेश में शुक्रवार को 9 दिन बाद उमरिया, डिंडौरी-बालाघाट समेत कई जिलों में तेज बारिश हुई। भोपाल में भी बूंदाबांदी का दौर रहा। लो प्रेशर एरिया (निम्न दाब क्षेत्र) और साइक्लोनिक सकुर्लेशन (चक्रवात) की वजह से बारिश वाला मौसम रहा।

वहीं, आज से नया सिस्टम भी एक्टिव हो जाएगा। इससे अगले 4 दिन तक प्रदेश में कई जिलों में भारी बारिश हो सकती है। मौसम एक्सपर्ट शैलेंद्र कुमार नायक ने बताया कि उत्तर-पश्चिम बंगाल की खाड़ी पर बना लो प्रेशर एरिया आगे बढ़ रहा है। इसके साथ सक्रिय ट्रफ से नमी भी पहुंच रही है। यह सिस्टम जैसे-जैसे मजबूत होगा, बारिश का दौर भी उतना ही स्ट्रॉन्ग होगा।

आज इन जिलों में बारिश

मौसम विभाग ने अगले 24 घंटे के अंदर डिंडौरी-उमरिया में भारी बारिश होने का अनुमान जताया है। भोपाल, रायसेन, सीहोर, विदिशा, इंदौर, झाबुआ, आलीराजपुर, धार, बुरहानपुर, बड़वानी, खंडवा, खरगोन, देवास, नर्मदापुरम, बैतूल, हरदा, ग्वालियर, श्योपुर, मुरैना, भिंड, दतिया, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, जबलपुर, कटनी, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, बालाघाट, मंडला, रीवा, सतना, सीधी, सिंगरौली, मऊगंज, मैहर, शहडोल, अनूपपुर, सागर, पन्ना, दमोह, छतरपुर, टीकमगढ़ और निवाड़ी में हल्की बारिश वाला मौसम रहेगा। वहीं, श्योपुर, गुना, राजगढ़, शाजापुर, उज्जैन, आगर-मालवा, रतलाम, नीमच और मंदसौर में धूप खिलेगी।

तेज बारिश के लिए टोना-टोटकों का दौर

भोपाल में कई दिन से तेज बारिश नहीं हुई है। इसलिए कोलार रोड पर गेस्ट हाउस के पास गधों को गुलाब जामुन खिलाए गए। शनिवार सुबह 11 बजे कई लोग कोलार गेस्ट हाउस के पास जुटे और गधों को गुलाब जामुन खिलाने लगे।

वर्षों पुरानी लोक मान्यता और परंपरा का हिस्सा

स्थानीय लोगों का कहना है कि यह वर्षों पुरानी लोक मान्यता और परंपरा का हिस्सा है। मान्यता है कि मानसून कमजोर पड़ने या समय पर बारिश न होने पर ऐसे प्रतीकात्मक उपायों से इंद्रदेव प्रसन्न होते हैं और अच्छी वर्षा होती है। इसी विश्वास के साथ लोगों ने गधों को गुलाब जामुन खिलाकर बारिश की प्रार्थना की। इस दौरान गधों को मिठाई खिलाने के साथ लोगों ने अच्छी बारिश और किसानों की खुशहाली की कामना की।

ललिता गौतम हत्याकांड के दोषी बचेंगे नहीं: योगी

● परिवार से मुलाकात की, 5 लाख की मदद, आवास देंगे

मुख्यमंत्री गाजियाबाद में अपनी बहन के घर भी गए

गाजियाबाद (एजेंसी)। सीएम योगी ने शनिवार को गाजियाबाद में ललिता गौतम के परिवार से मुलाकात की। योगी ने वीआईपी गेस्ट हाउस में करीब आधे घंटे तक ललिता के परिवार से बात की। कहा- दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा। कड़ी से कड़ी सजा दिलाएंगे। उन्होंने परिवार को 5 लाख की आर्थिक मदद, पिता और चाचा को एक-एक मुख्यमंत्री आवास देने का ऐलान किया। पुलिस अफसरों से अब तक की कार्रवाई की जानकारी ली।

परिवार बोला- सीएम से मिलकर तसल्ली हुई

सीएम योगी से मिलने के बाद ललिता गौतम के परिवार के सदस्य वेद प्रकाश ने कहा- आज हमारा पूरा परिवार मुख्यमंत्री से मिला। उन्होंने भरोसा दिलाया कि इस मामले में शामिल किसी भी अपराधी को बख्शा नहीं जाएगा। कोई छूट नहीं पाएगा। उन्हें कड़ी से कड़ी सजा दी जाएगी। हमें यह जानकर तसल्ली हुई कि जो अपराधी अभी भी फरार हैं, उन्हें भी सबूतों के आधार पर जेल भेजा जाएगा। अखिलेश यादव ने 6 दिन पहले शनिवार को पीड़ित परिवार से मुलाकात की थी। अखिलेश ने दिल्ली में 1 घंटे तक चर्चा की थी।

पटाखा फैक्ट्री में धमाका, 8 की मौत

अहमदाबाद (एजेंसी)। अहमदाबाद के वस्त्राल इलाके में शनिवार को पटाखा फैक्ट्री में धमाके के बाद आग लग गई। हादसे में 8 कर्मचारियों की मौत हो गई और करीब 15 घायल हो गए। सूचना मिलते ही दमकल की पांच से अधिक गाड़ियां और एम्बुलेंस मौके पर पहुंची। हादसे के समय फैक्ट्री में करीब 25 लोग काम कर रहे थे। हादसा रामोल से गतराड जाने वाले रास्ते पर महमूदपुरा टैलेंट के पास हुआ। वास्त्रल में रैपिड एक्शन फोर्स का कैंप है।
धमाके की आवाज सुनते ही आरएएफ जवान तुरंत घटनास्थल पहुंचे और दमकल कर्मियों के पहुंचने से पहले ही घायलों लोगों को बाहर निकाला। घायलों को पास के अस्पताल ले जाया गया।

वक्फ बोर्ड पर रोक के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुंची केरल सरकार

सर्वोच्च अदालत में दाखिल की याचिका, कहा-अर्जेंट सुनें मीलार्ड

सीजेआई सूर्यकांत भी हैं तैयार, सोमवार के लिए भर दी है हामी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केरल की कांग्रेस सरकार ने केरल हाई कोर्ट के उस आदेश के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की है, जिसमें राज्य वक्फ बोर्ड को कोई भी बड़ा फैसला लेने, कैपिटल खर्च करने या नीतिगत फैसले लेने से रोक दिया गया था। इस अपील को तत्काल सुनवाई के लिए भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली तीन सदस्यीय बेंच के सामने रखा गया। सीजेआई ने मामले को सोमवार को सूचीबद्ध करने पर सहमति जताई। अब इस मामले में सोमवार या मंगलवार को सुनवाई हो सकती है।

केरल सरकार की ओर से जल्द सुनवाई की अपील

सीजेआई सूर्यकांत ने मामले को सोमवार/मंगलवार को लिस्ट करने पर सहमति जताई, जब इसे अर्जेंट लिस्टिंग के लिए पेश किया गया। सीनियर एडवोकेट वी चितंबरेशन ने यह मामला उठाया और कहा कि दूसरी पार्टी को बिना कोई नोटिस दिए एक अंतरिम आदेश के जरिए बोर्ड को लगभग बेकार कर दिया गया है। सीनियर वकील ने बताया कि तमिलनाडु वक्फ बोर्ड से जुड़े एक ऐसे ही मामले में सुप्रीम कोर्ट ने अंतरिम राहत दी थी।

पत्नी ने स्कूल मालिक पति को सांप से डसवाकर मारा

● आधी रात बिस्तर पर सांप को छोड़ा, लव-मैरिज की थी ● महिला का मेरठ में शादीशुदा वैन ड्राइवर से अफेयर था

मेरठ (एजेंसी)। मेरठ में स्कूल संचालक पति को पत्नी ने सांप से डसवाकर मरवा दिया। उसने शादीशुदा वैन ड्राइवर प्रेमी के साथ मिलकर वारदात को अंजाम दिया। दामिनी ने पहले पति अतुल कुमार (32) को दूध में नींद की गोलियां मिलाकर पिला दी। फिर रात 2 बजे प्रेमी और सपेरों को बुलाकर बिस्तर पर करैत सांप छोड़ दिया। यह देश के 4 सबसे जहरीले सांपों में आता है। वारदात के बाद दामिनी ने प्रेमी तुषार पायला को वहां से भगा दिया और खुद दूसरे कमरे में सोने चली गई। दामिनी शुक्रवार सुबह 6 बजे कमरे में पहुंची और चीखने लगी। उसने परिजनों से कहा कि अतुल को सांप ने काट लिया है। कमरे में सांप मौजूद

था और अतुल के पैर पर डसने के निशान भी थे। इसे देखकर परिजनों को लगा कि उनकी मौत सांप के डसने से हुई है। मामला तब पलटा, जब पूछताछ में पत्नी दामिनी (30) ने बताया कि उसे गर्मी लग रही थी, इसलिए वह बेटे के साथ कमरे से बाहर सोने चली गई थी। उसके इस बयान पर परिजनों को शक हुआ और उन्होंने पुलिस को सूचना दे दी। पुलिस ने दामिनी को हिरासत में लेकर पूछताछ की। कॉल डिटेल खंगालने पर वैन ड्राइवर तुषार पायला से उसकी लगातार बातचीत सामने आई। तुषार को पकड़ा गया तो उसने पूरी साजिश कबूल कर ली। उसने बताया कि अतुल उनके रिश्ते में रोड़ा बन रहा था।

7 साल पहले लव मैरिज की, फिर परिवार से अलग रहने लगे

अतुल कुमार जिला मुख्यालय से 30 किमी भंडोरा गांव के रहने वाले थे। वह तीन भाइयों में सबसे छोटे थे। पिता अजब सिंह (72) खेती-किसानी करते हैं, जबकि मां संतोष देवी (69) गृहिणी हैं। बड़े भाई कुलदीप सेना से रिटायर हैं और पत्नी-बच्चों के साथ बहसूमा में रहते हैं। दूसरे भाई मनदीप ने चार साल पहले फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। वहीं, दामिनी ने डबल एमए और बीएड किया है। उसके पिता की मौत हो चुकी है। मां हस्तिनापुर में ही छोटे बेटे के साथ रहती हैं। 7 साल पहले अतुल ने परिवार के खिलाफ जाकर दामिनी से लव मैरिज की थी। पहले वह एक कंप्यूटर कंपनी में प्राइवेट नौकरी करते थे। चार साल पहले नौकरी छोड़कर उन्होंने कृष्ण किड्स प्ले स्कूल खोला, जिसे वह पत्नी के साथ मिलकर चलाते थे। स्कूल में नर्सरी से कक्षा 5 तक की पढ़ाई होती है और करीब 150 बच्चे पढ़ते हैं। अतुल के पिता अजब सिंह ने बताया कि दामिनी की परिवार से नहीं बनती थी। उसने कहा था कि किसी पुरोहित ने चार साल तक परिवार से अलग रहने की सलाह दी है। इसके बाद अतुल हस्तिनापुर में किराए के मकान में पत्नी दामिनी (30) और 6 साल के बेटे के साथ रहने लगे।

सांप से डसवाने से पहले कार से टक्कर भी मरवाई थी

पुलिस के मुताबिक, दो साल पहले तुषार ने अतुल के स्कूल में 10 हजार रुपए पर वैन ड्राइवर की नौकरी शुरू की। इसी दौरान उसकी दामिनी से नजदीकियां बढ़ गईं और दोनों के बीच अफेयर शुरू हो गया। दोनों शादी करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने अतुल को रास्ते से हटाने और 20 लाख रुपए की बीमा राशि हासिल करने की साजिश रची। योजना थी कि हत्या के बाद तुषार अपनी पत्नी को तलाक देगा और दोनों नई जिंदगी शुरू करेंगे। जांच में पता चला कि दामिनी पिछले एक साल से पति की हत्या की साजिश रच रही थी। कुछ दिन पहले अतुल को एक अर्टिगा कार से टक्कर भी मारी गई थी, लेकिन दामिनी ने उस मामले में मुकदमा दर्ज कराने से मना कर दिया। पुलिस के अनुसार, वह लंबे समय से अतुल के खाने में नशीली गोलियां भी मिला रही थी। अतुल को इस बात का शक हो गया था। उन्होंने अपनी मां से भी इसकी शिकायत की थी। इसी वजह से उनकी तबीयत कई बार बिगड़ी और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा।

अनिका के इलाज में देरी पर हाईकोर्ट सख्त, 'एम्स' से 23 तक जवाब मांगा

इंदौर। स्पाइनल मस्कुलर एट्रोफी (एसएमए) टाइप-2 जैसी गंभीर और दुर्लभ बीमारी से जूझ रही 3 वर्षीय अनिका शर्मा के इलाज में हो रही देरी पर मध्य प्रदेश हाई कोर्ट की इंदौर खंडपीठ ने कड़ा रुख अपनाया है। गुरुवार को हुई सुनवाई के दौरान एम्स नई दिल्ली की ओर से एक बार फिर जवाब प्रस्तुत नहीं किए जाने पर कोर्ट ने नाराजगी जताते हुए 23 जुलाई तक हर हाल में विस्तृत जवाब दाखिल करने के निर्देश दिए। जस्टिस संदीप एन भट्ट की एकल पीठ ने स्पष्ट किया कि मामले की गंभीरता को देखते हुए अब किसी प्रकार की अनावश्यक देरी स्वीकार नहीं की जाएगी। मामले की अगली सुनवाई 27 जुलाई 2026 को होगी। अनिका की ओर से अधिवक्ता चंचल गुप्ता और लखन शर्मा ने याचिका प्रस्तुत कर बताया कि बच्ची एसएमए टाइप-2 बीमारी से पीड़ित है। इस बीमारी के इलाज के लिए करीब 9.5 करोड़ रुपए की आवश्यकता है। परिजनों ने केंद्र सरकार से स्वीकृत 50 लाख रुपए की सहायता के अलावा सामाजिक संस्थाओं और आम नागरिकों के सहयोग से क्राउडफंडिंग के माध्यम से 7.5 करोड़ रुपए से अधिक की राशि एकत्र कर ली है। इसके बावजूद अब तक इलाज शुरू नहीं हो सका है।

एसएमए पीड़ित बच्ची के बारे में कोर्ट ने कहा 'अब देरी बर्दाश्त नहीं'

अभी डेढ़ करोड़ की जरुरत - सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता पक्ष ने अदालत को बताया कि इलाज के लिए अभी भी करीब 1 से 1.5 करोड़ रुपए की अतिरिक्त आवश्यकता है। उनका कहना था कि हर दिन की देरी बच्ची की सेहत पर प्रतिकूल असर डाल रही है। परिजनों के अनुसार एम्स प्रशासन ने बताया है कि केंद्र सरकार से स्वीकृत 50 लाख रुपए की राशि की स्थिति स्पष्ट होने के बाद ही जीवन रक्षक इंजेक्शन उपलब्ध कराने वाली कंपनी से इनवॉइस मंगाई जाएगी। दूसरी ओर, सामाजिक संगठनों और लोगों के सहयोग से जुटाई गई राशि भी इनवॉइस जारी नहीं होने के कारण उपयोग में नहीं लाई जा रही है। इस वजह से धन उपलब्ध होने के बावजूद इलाज की प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ पा रही है।

23 तक जवाब के निर्देश

याचिकाकर्ता पक्ष ने अदालत को यह भी बताया कि पिछली सुनवाइयों के दौरान केंद्र सरकार, राज्य सरकार और एम्स की ओर से लगातार समय मांगा जाता रहा है। जबकि, यह मामला एक गंभीर बीमारी से जूझ रही मासूम बच्ची के जीवन से जुड़ा है। इस पर कोर्ट ने नाराजगी जताते हुए एम्स को 23 जुलाई तक अपना विस्तृत जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया, ताकि मामले में आगे की सुनवाई और आवश्यक निर्णय लिए जा सके।

स्कूल वाहनों पर कार्रवाई, 4 वाहन जब्त

धार। जिले में विद्यार्थियों की सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित करने के उद्देश्य से परिवहन विभाग ने 16 और 17 जुलाई को शैक्षणिक संस्थानों के स्कूल वाहनों के खिलाफ विशेष जांच अभियान चलाया। राजगढ़ और मनावर क्षेत्र में संयुक्त रूप से की गई। इस कार्रवाई के दौरान स्कूल वाहनों की फिटनेस, प्रदूषण प्रमाणपत्र (पीयूसी) तथा अन्य आवश्यक दस्तावेजों की गहन जांच की गई। नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहनों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करते हुए जुर्माना वसूला गया और वाहन भी जब्त किए गए। 16 जुलाई को राजगढ़ क्षेत्र में चलाए गए अभियान के दौरान 55 स्कूल वाहनों की जांच की गई। इस दौरान 8 वाहन नियमों के विपरीत संचालित पाए गए। इनमें से 4 वाहनों को जब्त कर राजगढ़ थाना परिसर में खड़ा कराया गया। विभिन्न अनियमितताओं के चलते संबंधित वाहन संचालकों से कुल 48,000 रुपए का जुर्माना वसूला गया। इसके अगले दिन 17 जुलाई को मनावर क्षेत्र में अभियान जारी रखा गया। यहां 36 स्कूल वाहनों की जांच की गई, जिनमें 6 वाहन नियमों का उल्लंघन करते पाए गए। इन वाहनों पर कार्रवाई करते हुए कुल 1,48,000 रुपए का जुर्माना लगाया गया। यह अभियान अतिरिक्त क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी हृदेश यादव के निर्देशन में चलाया गया। कार्रवाई में परिवहन उप निरीक्षक कुमारी दिव्या पाटीदार, सहायक वर्ग-2 मधुकर सिसोदिया तथा विभागीय टीम ने सक्रिय भूमिका निभाई।

गीत व शॉर्ट फिल्म से नशामुक्ति संदेश

इंदौर। नशे के खिलाफ पुलिस ने अपने अभियान नशे से दूरी है जरूरी 2.0 के तहत जागरूकता गीत और शॉर्ट फिल्म का लोकार्पण किया है। पुलिस कमिश्नर संतोष कुमार सिंह ने शुक्रवार को इन दोनों वीडियो का शुभारंभ करते हुए कहा कि नशा मुक्त समाज बनाने जनभागीदारी सबसे अहम है। अभियान के तहत डीसीपी क्राइम राजेश त्रिपाठी की आवाज में तैयार किया गया गीत भैया, नशे से दूरी है जरूरी ... जीवन की हर खुशियां हैं जरूरी लोगों को नशे के दुष्परिणामों से आगाह करते हुए स्वस्थ और सकारात्मक जीवन अपनाने का संदेश देता है। पुलिस ने नशे के दुष्प्रभावों पर आधारित शॉर्ट फिल्म भी तैयार की है। नशे की लत केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य और भविष्य को ही नहीं, बल्कि उसके परिवार और पूरे समाज को भी गंभीर नुकसान पहुंचाती है। गीत और शॉर्ट फिल्म को शहर में चल रहे जनजागरूकता रथों, प्रमुख सार्वजनिक स्थलों और विभिन्न डिजिटल स्क्रीन के माध्यम से प्रसारित किया जाएगा, ताकि अधिक से अधिक लोगों तक नशामुक्ति का संदेश पहुंच सके। पुलिस कमिश्नर ने कहा कि पुलिस नए और प्रभावी माध्यमों से नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक कर रही है।

पुणे रेलखंड में भूस्खलन से यातायात प्रभावित

इंदौर। महाराष्ट्र के विभिन्न इलाकों में लगातार हो रही भारी बारिश और पुणे रेलखंड में हुए भूस्खलन का असर पश्चिम रेलवे के रतलाम मंडल से गुजरने वाली कई ट्रेनों पर पड़ा है। रेल प्रशासन ने यात्रियों की सुरक्षा और परिचालन व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए कुछ ट्रेनों को निरस्त करने तथा कुछ को परिवर्तित मार्ग से संचालित करने का निर्णय लिया है। इंदौर और दौंड के बीच चलने वाली ट्रेन संख्या 22944 इंदौर-दौंड सुपरफास्ट एक्सप्रेस 18 जुलाई 2026 से 24 जुलाई 2026 तक निरस्त रहेगी। इसी अवधि में दौंड से इंदौर आने वाली ट्रेन संख्या 22943 दौंड-इंदौर सुपरफास्ट एक्सप्रेस भी रद्द रहेगी। इसके अलावा कुछ ट्रेनों का संचालन अस्थायी रूप से बदले हुए मार्ग से किया जाएगा। 23 जुलाई 2026 को अजमेर से रवाना होने वाली ट्रेन संख्या 20991 अजमेर-दौंड एक्सप्रेस सूरत, पालधी और मनमाड होकर चलेगी। 18 जुलाई को ग्वालियर से प्रस्थान करने वाली ट्रेन संख्या 22194 ग्वालियर-दौंड एक्सप्रेस भी सूरत, पालधी और मनमाड के रास्ते से संचालित की गई। 19 जुलाई को दौंड से चलने वाली ट्रेन संख्या 22193 दौंड-ग्वालियर एक्सप्रेस का संचालन भी परिवर्तित मार्ग से होगा। यह ट्रेन दौंड, मनमाड, जलगांव, पालधी और सूरत होकर अपने गंतव्य की ओर जाएगी। रेलवे ने यात्रियों से अपील की है कि यात्रा शुरू करने से पहले अपनी ट्रेन की स्थिति की जानकारी अवश्य प्राप्त कर लें, ताकि अनावश्यक परेशानी से बचा जा सके। लगातार वर्षा और भूस्खलन की स्थिति को देखते हुए आगे भी परिचालन व्यवस्था में आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जा सकता है।

गांधीनगर, लसूड़िया में महिलाओं से दुष्कर्म

इंदौर। गांधीनगर और लसूड़िया में दो महिलाओं के साथ दुष्कर्म का मामला सामने आया है। गांधीनगर थाने में 42 वर्षीय महिला की शिकायत पर गुरदाखेड़ी हातोद के युवक पर केस दर्ज किया है। महिला ने बताया कि फरवरी 2025 में गांधीनगर से राऊ जाते समय उसकी आरोपी से पहचान हुई थी। इसके बाद दोनों के बीच संबंध बने। आरोपी शादी का वादा कर उसके घर आता रहा। एक साल बाद जब उसने शादी की बात की तो आरोपी ने इनकार कर दिया। लसूड़िया थाने में युवती ने भिंड निवासी युवक की शिकायत करते हुए बताया कि सितंबर 2025 में पढ़ाई के दौरान दोनों की दोस्ती हुई थी। शादी का भरोसा देकर आरोपी उसके साथ लिव-इन में रहने लगा और इस दौरान दोनों के बीच शारीरिक संबंध बने। आरोपी ने उससे रुपए भी उधार लिए। मार्च में वह भिंड जाने की बात कहकर चला गया और बाद में शादी से इनकार कर दिया। जुलाई में दोबारा मिलने के बाद भी उसने शादी का भरोसा देकर संबंध बनाए, लेकिन बाद में फिर शादी से मना कर दिया।

टक्कर से छोटे भाई की मौत, बड़ा घायल

इंदौर। लसूड़िया थाना क्षेत्र में गुरुवार रात दर्दनाक सड़क हादसे में 18 वर्षीय युवक की जान चली गई, जबकि उसका बड़ा भाई घायल हो गया। दोनों भाई बाइक से हाट बाजार खरीदारी करने जा रहे थे, तभी ओमैक्स सिटी के पास किसी अज्ञात वाहन ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। हादसा ओमैक्स सिटी के समीप हुआ। बाइक पर सवार रोहित (18) पिता बछिया और उसका बड़ा भाई राकेश निवासी निपानिया सड़क से गुजर रहे थे। इसी दौरान पीछे से आए अज्ञात वाहन ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। हादसे के बाद मौजूद लोगों ने दोनों को तुरंत अस्पताल पहुंचाया। इलाज के दौरान रोहित की मौत हो गई, जबकि राकेश का उपचार जारी है। परिजनों ने बताया कि दोनों भाई मूल रूप से धार जिले के रहने वाले थे। दो महीने पहले ही वे रोजगार की तलाश में इंदौर आए थे और भवंस स्कूल के पीछे स्थित टाउनशिप में बेलदारी का काम कर रहे थे। घटना के समय दोनों ओमेक्स क्षेत्र में लगने वाले हाट बाजार से घरेलू सामान खरीदने जा रहे थे। हादसे के वक्त दोनों भाइयों के माता-पिता किसी काम से गुजरात गए हुए थे। घटना की जानकारी मिलते ही वे इंदौर के लिए रवाना हो गए। पुलिस आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है ताकि टक्कर मारकर फरार हुए अज्ञात वाहन और उसके चालक की पहचान की जा सके।

दिनेश मकवाना आत्महत्या मामले में आबकारी अधिकारी को राहत मिली

हाई कोर्ट में सीबीआई जांच के आदेश, दर्ज एफआईआर निरस्त

इंदौर। चर्चित दिनेश मकवाना आत्महत्या प्रकरण में मध्य प्रदेश हाईकोर्ट की इंदौर खंडपीठ ने अहम फैसला सुनाते हुए आबकारी अधिकारी मंदाकिनी दीक्षित को बड़ी राहत प्रदान की है। हाईकोर्ट की डिवीजन बेंच ने सिंगल बेंच के उस आदेश को निरस्त कर दिया है, जिसमें मामले की जांच केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) से कराने के निर्देश दिए गए थे। इसके साथ ही सीबीआई द्वारा इस मामले में दर्ज की गई एफआईआर भी रद्द कर दी गई है। यह मामला शराब ठेकेदार दिनेश मकवाना की आत्महत्या से जुड़ा है, जिसने उस समय प्रदेशभर में व्यापक चर्चा बटोरी थी।

आत्महत्या के पीछे कथित प्रशासनिक दबाव और कुछ अधिकारियों की भूमिका को लेकर सवाल उठे थे। इसी पृष्ठभूमि में मामला हाईकोर्ट पहुंचा था, जहां सुनवाई के दौरान सिंगल बेंच ने उपलब्ध तथ्यों के आधार पर आबकारी अधिकारी मंदाकिनी दीक्षित की भूमिका की जांच सीबीआई से कराने का आदेश दिया था। सिंगल बेंच के निर्देश के बाद सीबीआई ने मामले में एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी थी। हालांकि, इस आदेश को चुनौती देते हुए दायर अपील पर डिवीजन बेंच ने विस्तृत सुनवाई की। सुनवाई के बाद अदालत ने सिंगल बेंच के आदेश को पलटते हुए कहा कि उपलब्ध परिस्थितियों में सीबीआई जांच जारी रखने के लिए पर्याप्त आधार नहीं हैं। इसी कारण सीबीआई जांच के आदेश निरस्त कर दिए गए और जांच के लिए दर्ज एफआईआर भी समाप्त कर दी गई।

प्रकरण की कानूनी स्थिति बदली

डिवीजन बेंच के इस फैसले के बाद मंदाकिनी दीक्षित के खिलाफ सीबीआई की जांच प्रक्रिया पूरी तरह समाप्त हो गई है। अदालत के आदेश के अनुसार अब इस प्रकरण में सीबीआई की ओर से कोई जांच आगे नहीं बढ़ाई जाएगी। इस निर्णय के साथ मामले की कानूनी स्थिति में महत्वपूर्ण बदलाव आ गया है, क्योंकि सिंगल बेंच के आदेश के आधार पर शुरू हुई पूरी सीबीआई कार्रवाई अब प्रभावहीन हो गई है।

खजराना में प्रशासन की बड़ी कार्रवाई, करोड़ों की जमीन अतिक्रमण से मुक्त

निर्धारित अस्पताल का मार्ग खुला, 7 दुकानें, 2 मकान, झोपड़ियां हटाई

इंदौर। कलेक्टर शिवम वर्मा के निर्देश पर जिला प्रशासन ने शनिवार को खजराना क्षेत्र में व्यापक अतिक्रमण विरोधी अभियान चलाकर 6.72 करोड़ रुपये मूल्य की शासकीय भूमि को कब्जा मुक्त कराया। इसी जमीन पर खजराना का अस्पताल निर्माण प्रस्तावित है। संयुक्त कार्रवाई में राजस्व विभाग, नगर निगम और पुलिस की टीम ने सरकारी जमीन पर बने अवैध निर्माण हटाते हुए भविष्य में प्रस्तावित अस्पताल निर्माण के लिए भूमि उपलब्ध करा दी। यह कार्रवाई अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) घनश्याम धनगर के नेतृत्व में की गई। अभियान के दौरान ग्राम खजराना के सर्वे क्रमांक 435/1/1/1 स्थित 1.200 हेक्टेयर शासकीय भूमि से अतिक्रमण हटाया गया। इस दौरान 7 अवैध दुकानें, 2 मकान, झोपड़ियां तथा टीन शेड को हटाकर सरकारी भूमि को पूरी तरह मुक्त कराया गया। प्रशासन के अनुसार इस भूमि पर अस्पताल का निर्माण प्रस्तावित है। अस्पताल बनने के बाद क्षेत्र के हजारों लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हो सकेंगी। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की गई। अभियान के दौरान राजस्व विभाग, नगर निगम और पुलिस का पर्याप्त अमला मौके पर मौजूद रहा। किसी भी संभावित विरोध या अप्रिय स्थिति से निपटने के लिए पर्याप्त पुलिस बल की भी तैनाती की गई थी, जिससे पूरी कार्रवाई शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुई।

कलेक्टर ने कहा कि जनहित से जुड़े विकास कार्यों में बाधा बनने वाले शासकीय भूमि पर अवैध कब्जों को किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि सरकारी संपत्तियों की सुरक्षा और विकास परियोजनाओं के लिए आवश्यक भूमि उपलब्ध कराने के उद्देश्य से जिलेभर में अतिक्रमण हटाने का अभियान आगे भी लगातार जारी रहेगा।

70 करोड़ की एमडी ड्रग तस्करी मामले में ईडी की बड़ी कार्रवाई

इंदौर, मंदसौर में कई ठिकानों पर छापे, मनी ट्रेल की जांच

इंदौर। करीब 70 करोड़ रुपए मूल्य की 70 किलो एमडी ड्रग तस्करी के मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने इंदौर और मंदसौर में एक साथ कई ठिकानों पर छापामार कार्रवाई की। इस दौरान मामले के मुख्य आरोपी को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

कार्रवाई के दौरान एजेंसी ने कई महत्वपूर्ण दस्तावेज, डिजिटल साक्ष्य और वित्तीय रिकॉर्ड जब्त किए हैं। अब ईडी पूरे नेटवर्क, अपराध से अर्जित संपत्ति और धन के प्रवाह की गहराई से जांच कर रही है। यह कार्रवाई इंदौर क्राइम ब्रांच द्वारा एनडीपीएस एक्ट की धारा 8 और 22 के तहत दर्ज प्रकरण के आधार पर की गई। मामले की जांच के दौरान पता चला कि मुख्य आरोपी अपने सभी ज्ञात ठिकानों से फरार चल रहा था। इसके बाद ईडी ने उसकी तलाश के लिए व्यापक स्तर पर खुफिया निगरानी शुरू की।

कई दिनों तक नजर रखी- जांच एजेंसी ने हैदराबाद, बीकानेर और इंदौर में कई दिनों तक आरोपी की गतिविधियों पर नजर रखी। लगातार ट्रैकिंग और निगरानी के बाद उसे इंदौर के एक अज्ञात ठिकाने से गिरफ्तार कर लिया गया।

जीजाबाई कॉलेज के आसपास सुरक्षा बढ़ाई, आदेश के बाद पुलिस सक्रिय

कॉलेज के आसपास भीड़ लगाने वाले ठेलों, टपरियों को हटाया

इंदौर। मोती तबेला स्थित शासकीय जीजाबाई कॉलेज की छात्राओं द्वारा सुरक्षा संबंधी शिकायत सामने आने के बाद प्रशासन ने कदम उठाए हैं। कलेक्टर शिवम वर्मा ने मामले को गंभीरता से लेते हुए अधिकारियों को तुरंत कार्रवाई के निर्देश दिए थे। इसके बाद संयुक्त कलेक्टर रुति अग्रवाल ने पुलिस बल के साथ कॉलेज परिसर और आसपास के क्षेत्र का निरीक्षण कर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया।

इस दौरान संयुक्त कलेक्टर ने छात्राओं से सीधे संवाद कर उनकी समस्याएं सुनी। कॉलेज आने-जाने के दौरान आने वाली परेशानियों की जानकारी ली। छात्राओं ने सुरक्षा से जुड़े कई मुद्दे अधिकारियों के सामने रखे। निरीक्षण में कॉलेज के आसपास ऐसे स्थानों की पहचान की गई, जहां ईव-टीजिंग या असामाजिक गतिविधियों की आशंका रहती है। इन संवेदनशील स्थानों को चिन्हित कर वहां सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने के निर्देश दिए गए, ताकि छात्राएं बिना किसी डर के महाविद्यालय आ-जा सकें। सुरक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने कॉलेज के आसपास अनावश्यक भीड़ लगाने वाले ठेले और टपरियों को भी हटाया। इस तरह की भीड़भाड़ कई बार असामाजिक तत्वों को बढ़ावा देती है और छात्राओं को असहज स्थिति का सामना करना पड़ता है।

नियमित तैनाती सुनिश्चित की

इसके साथ ही कॉलेज समय के दौरान महिला पुलिस कर्मियों के साथ एफआरवी (फर्स्ट रिस्पॉन्स व्हीकल) की नियमित तैनाती सुनिश्चित की गई है। पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि कॉलेज परिसर और आसपास के क्षेत्रों में नियमित पेट्रोलिंग की जाए तथा हर गतिविधि पर कड़ी निगरानी रखी जाए। कालेज के पिछले प्रवेश द्वार की सुरक्षा व्यवस्था को भी मजबूत करने के निर्देश दिए। यहां अतिरिक्त सुरक्षा इंतजाम किए जाएंगे ताकि किसी भी प्रकार की अवांछित गतिविधि पर तुरंत रोक लगाई जा सके।

राऊ चौराहा व बायपास पर सख्त जांच, 11 वाहनों पर कार्रवाई की

इंदौर। जिले में सड़क सुरक्षा और यातायात नियमों का पालन सुनिश्चित कराने के लिए परिवहन विभाग का अभियान लगातार जारी है। इसी क्रम में संभागीय परिवहन सड़क सुरक्षा दस्ता ने शुक्रवार को राऊ चौराहा और बायपास क्षेत्र में विशेष जांच अभियान चलाकर लोक परिवहन, स्कूल एवं कॉलेज वाहनों तथा मालवाहक वाहनों की सघन जांच की। कार्रवाई के दौरान नियमों का उल्लंघन पाए जाने पर 11 वाहनों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए एक लाख रुपये से अधिक का जुर्माना वसूला गया। संभागीय परिवहन सड़क सुरक्षा दस्ता द्वारा जांच के दौरान वाहनों के आवश्यक दस्तावेज, परमिट की शर्तों का पालन, निर्धारित क्षमता से अधिक सवारी बैठाने, वाहन की गति, स्पीड गवर्नर और अन्य सुरक्षा प्रावधानों की विस्तार से जांच की गई। इसके साथ ही यह भी देखा गया कि कहीं बस संचालक यात्रियों से निर्धारित किराए से अधिक राशि तो नहीं वसूल रहे हैं और कहीं वाहन ओवरलोड होकर तो नहीं चलाए जा रहे हैं।

उच्च सुरक्षा पंजीयन नंबर प्लेट- अभियान के दौरान अधिकारियों ने वाहन मालिकों और चालकों को अपने वाहनों पर उच्च सुरक्षा पंजीयन नंबर प्लेट (एचएसआरपी) अनिवार्य रूप से लगवाने के लिए भी जागरूक किया। स्कूल और कॉलेजों में विद्यार्थियों के परिवहन में लगे वाहनों की अलग से जांच की गई। इस दौरान यह सुनिश्चित किया गया कि सभी वाहन निर्धारित सुरक्षा मानकों का पालन कर रहे हैं तथा उनके दस्तावेज और परमिट पूरी तरह वैध हैं, ताकि विद्यार्थियों की सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित की जा सके।

सड़क सुरक्षा अभियान के तहत एक लाख से अधिक जुर्माना

11 वाहनों के विरुद्ध कार्रवाई

संभागीय परिवहन सड़क सुरक्षा दस्ता के प्रभारी परिवहन निरीक्षक आकाश सितोले ने बताया कि जांच के दौरान बसों में इमरजेंसी एग्जिट, फायर सेफ्टी सिस्टम और आपातकालीन स्थिति में सुरक्षित निकास की व्यवस्था का भी निरीक्षण किया गया। कई वाहनों में सुरक्षा संबंधी कमियां और मोटर यान अधिनियम के प्रावधानों का उल्लंघन पाए जाने पर 11 वाहनों के विरुद्ध कार्रवाई की गई और एक लाख रुपये से अधिक का जुर्माना लगाया गया। उन्होंने बताया कि वाहन संचालकों और मालिकों को स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि सभी वाहन मोटर यान अधिनियम और निर्धारित सुरक्षा मानकों के अनुरूप ही संचालित किए जाएं। विभाग ने यह भी स्पष्ट किया है कि सड़क सुरक्षा नियमों की अनदेखी करने वाले वाहनों के विरुद्ध आगे भी इसी तरह नियमित और सख्त कार्रवाई जारी रहेगी।

कहानी

डॉ. यशोधरा भटनागर

जीवन संगीत

एक गहरा सन्नाटा ! एक अपरिचित वातावरण! हरे पर्दे! बँधे-बँधे से हाथ-पैर!ओह!असहनीय दर्द! सिर घुमा कर देखने की एक कोशिश !

प्लीज डोंट मूव। नर्स ने उसे कुछ सखूत लहज़े में कहा तो वह सहम गया ।

फिर वही भयावह दृश्य उसके नेत्रपटल पर सजीव हो गया ।

रिया को समझाने की आखिरी कोशिश भी नाकाम रही। खुद से ज्यादा उसने रिया को चाहा ।

एक्सीडेंट के बाद ,साल भर से बिस्तर पर पड़े,रिया के बीमार भाई पिंटू की देखभाल की जिम्मेदारी बड़े प्यार से अपने ऊपर ले ली। परित्यक्ता रिया माँ और पूरे घर के हर छोटे-बड़े काम उसने अपने मजबूत कंधे पर उठा लिए।उनके लिए वह भावी जंवाई नहीं, बेटे से ज्यादा बहुत कुछ था।चाहे दाल-चावल रोजमर्रा के सामान की खरीदारी हो या रिया के लिए फैशनेबल ड्रेसेस, वह तन-मन-धन से साथ निभाता रहा।न जाने क्यों आई-बाबा रिया को अपने घर की बहू बनाने के लिए तैयार ही न थे।घर में शीत युद्ध का वातावरण!आई चुपचाप खाना दे देती और बाबा उसे देख मुँह फेर लेते।दिल बैठा जा रहा था। रिया के बिना जीवन की कल्पना भी कितनी मुश्किल थी।

आई डायनिंग टेबल पर खाना लगा रही थी।वह यंत्रवत् सा उठ कर सीधे आई के पास पहुँच गया।

आई ! आई हेल्प करूँ तेरी? और छोटे बच्चे सा उसके आँचल में समा गया ।माँ की ममता पिघल कर आँखों से बह चली-ज्ज्मेरा बच्चा !करण।भीगे स्वर में बोला -आई ! मान जा न! रिया बहुत अच्छी लड़की है।प्लीज़ आई ! मेरे लिए।आई का दिल कुछ पसीजा,आई मान गई । फिर बाबा भी।करण के पैर जमीन पर नहीं पड़ते थे।आई-बाबा पाँव छू कर,रिया के पास दौड़ पड़ा ।रिया ! रिया ! रिया! गेट के बाहर से ही चिल्लाता हुआ अंदर को दौड़ा।रिया को बाँहों मैं समेट, पूरे घर का चक्कर लगा लिया।

आई-बाबा मान गए हैं।अब जल्दी ही सगाई कर लेंगे।

दोनों ने खूब शॉपिंग की।रिया की पसंद की डायमंड रिंग, नेकलेस ,ड्रेसेस न जाने क्या-क्या खरीद कर, वह रिया को खुश देखकर फूला न समाया। रिया ही तो उसकी खुशी है। दिल पंख लगा कर उड़ रहे थे। वेलेंटाइन डे पर दोनों ने सगाई की अंगूठी एक-दूसरे को पहना कर,शादी के बंधन में बँधने का वादा कर लिया।

फ्रैंडबुक पर स्टेटस डाल कर, पास-दूर के दोस्तों से बधाई ,लाइक और कमेंट्स पाकर फूला न समा रहा था । वह ही तो संसार का सबसे भाग्यवान इंसान है ।चारों ओर उसे रिया ही रिया दिखती किंतु दूसरे ओर रिया के चेहरे पर तनाव और चिंता की उभरती लकीरें !उदास रिया के चेहरे को देख उसने कई बार पूछा भी-ज्ज्क्या बात है ?कोई परेशानी?

नहीं ! बस माँ और पिंटू की चिंता है।तुम शादी के बाद घर जवांई बन कर रहोगे न यहाँ? मतलब मेरे घर में?यू मीन घर जंवाई ?उसकी आँखें आश्चर्य से फैल गई।कुछ हैरान ,परेशान ,टेंशन से घिरा वह घर पहुँचा।

आई बाहर ही ,झूले पर बैठी सब्जी साफ कर रही थीं।

काय झाला?चेहरा क्यों उतरा हुआ है?वह सब कुछ भूलकर ,झूले पर ही आई की गोदी में सिर रखकर बैठ गया।नन्हा सा करण।आई के नरम खुरदरे हाथों के स्पर्श से वह थोड़ा सहज हुआ ।आई रिया तो...।वह पूरी कहानी एक ही सांस में कह गया।आई का बड़ी गोल बिंदी सजा खिला-खिला चेहरा भी क्षण भर के लिए कुम्हला गया फिर स्वयं को कुछ संयत करके बोली-बस ! कोई बात नहीं पास ही तो है उसका घर। एक ही शहर में। हफ्ते में दो-तीन दिन तो वहाँ रह लेना ,उसके परिवार की भी देखभाल होती रहेगी बाकी दिन हमारे साथ।

आई के पास हर परेशानी का समाधान रहता है । घुटने पेट की ओर सिकोड़ कर आई की गोदी में लेट गया आँखें मूंद लीं।

पर रिया कहाँ थमी ? उस की शर्तों की फेहरिस्त-एक के बाद दूसरी ,तीसरी ...बढ़ती चली जा रही थी।

अब तो रिया को नई सनक सवार हो गई थी।

करण सगाई तोड़ दो।मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती।

आखिर रिया उससे चाहती क्या है? करण कुछ न कहता पर अंदर ही अंदर टूट गया था।आँखों के नीचे स्याह काले घेरे बन गए थे,दाढ़ी और रेज़र का संबंध भी टूट गया था।चेहरे पर दर्द ने घर बना लिया था।

सुंदर-बलिष्ठ,सुदर्शन बेटे की यह हालत आई-बाबा से देखी न गई। बेटे की ममता में डूबे वे रिया के घर पहुँच गए।

रिया घर पर ही थी।बेटा !बेटा रिया!

रिया ने पहचान कर भी नहीं पहचाना।अजनबी बन बड़ी बेरुखी से मुँह फेर लिया।मैं आपसे कोई बात नहीं करना चाहती।प्लीज़ आप लोग चले जाइए।अस्थमा की मरीज आई का दम फूल गया पर रिया ने पलट कर भी न देखा।

पास ही नीम के नीचे बने चबूतरे पर आई को बैठा दिया।हे ईश्वर! यह क्या?सामने के घर से एक ग्लास पानी लाकर आई को पिलाया।फिर टैक्सी ले,घर की राह पकड़ी।घर में एक निस्तब्धता,नीरवता और चुप्पी चारों ओर फैल गई।।पता ही नहीं चला ,कब शाम ढली और अंधेरा हो गया।अरे क्या बात है काकु! आज दीया बत्ती नहीं की?

पास वाली काकु की बेटी ईशा का मधुर स्वर नीरवता को भेद गया।दोनों चौंक गए !अंधेरा कितना गहरा और घना हो गया था,उन्हें पता ही नहीं चला।पास ही लाइट का स्विच दबाया कमरे में उजाला ही उजाला हो गया।काश! ऐसा कोई स्विच उनके बेटे के जीवन में भी उजाला ला सके।

आखिरकार उसे वह खबर मिली जिसकी उसने जिसकी उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी।रिया ने अपने बॉस के साथ सगाई कर ली थी। अगले महीने दोनों विवाह सूत्र में बंधने वाले थे। करण सुन-समझ कर भी कुछ न समझ सका। बदहवास सा वह कार में यहाँ से वहाँ घूम रहा था। तभी भीषण तेज आवाज़ !कार पेड़ से टकराकर रुक गई थी।फिर उसकी चेतना शून्य हो गई।वह अचेत हो गया।

आँखें खुलीं तो गहरे सन्नाटे में खुद को देख करण बुदबुदाया-रिया तुम ऐसा नहीं कर सकती ! रिया आई लव यू।काकु ! काकु! करण को होश आ गया।खुशी से उमगती ईशा का मृदु स्वर मोहक संगीत सा चारों ओर फैल गया। लगभग दौड़ते हुए आई-बाबा उसके पास आए।उसका माथा चूम लिया.-माझा करण! करण कैसा है रे तू? कैसा है बेटा?दोनों की खुशी भरभराते आँसुओं संग उमड़ पड़ी।

सब तेरे लिए प्रार्थना कर रहे हैं बेटा और यह ईशा तो...।ज्ज आई बड़े प्यार से ईशा को देखते हुए बोलीं।करण ने धीरे से ईशा की ओर नजर सामने घुमाई,ईशा कुछ संकुचित हो ,तिरछी झुकी हुई बड़ी -बड़ी कजरारी आँखों से करण को देख रही थी।

उसने पहली बार ईशा को ध्यान से देखा-गौरवर्णी,तन्वंगी ,मृगनयनी ईशा ने अपनी सुदीर्घ केशराशि को बड़ी ही लापरवाही से समेट ,एक जूड़े में अनुशासित कर दिया था।बंद गले का सूती कुर्ता और चूड़ीदार पजामा,चेहरे पर सरलता,अधरों पर निश्छलता भरी मुस्कान,कैसी भली लग रही है!बेटा !अब तो कुछ खा ले!ज्ज आई ने लाड़ भरे स्वर में ईशा से कहा।काकु आप चलिए मैं आती हूँ।आपने भी कल से कुछ नहीं खाया है।आप दोनों खाना खा लीजिये और थोड़ा आराम कर लीजिए ।मैं करण के पास हूँ ?।आप चिंता मत कीजिए।काका खाने के पहले शुगर की टेबलेट लेना मत भूलना।आज्ञाकारी बच्चे से आई-बाबा कमरे से बाहर चले गए ।ईशा कमरे में चहल-कदमी करती रही। उसके चेहरे से व्यग्रता स्पष्ट दिखाई दे रही थी । एक्सक्यूज मी।सर! ईशा उठ खड़ी हुई। डॉक्टर और नर्स राउंड पर थे।डॉक्टर साहब करण ठीक तो है न?कोई चिंता की बात तो नहीं ?बस पैर में काफी चोट आई है।घुटने का मेजर ऑपरेशन हुआ है ।सिर और हाथ में मामूली सी चोटें हैं।विद इन वन मंथ ही विल बी ऑल राइट। नथिंग टू वरी।ऐट लीस्ट फॉर वन मंथ कंपलीट रेस्ट।ईशा ने राहत की सांस ली।टेबल पर रखा मेडिसिन और डाइट का चार्ट ध्यान से देखा और बड़ी मुस्तैदी से करण की देखरेख का भार अपने नाज़ुक कंधों पर ले लिया ।तुरंत अपने संगीत महाविद्यालय में भी छुट्टी के लिए प्राचार्य को मेल कर दिया।करण को समय पर नाश्ता,जूस,सूप,खाना,दवाइयाँ,खाना आदि देने का काम पूरी लगन से करने लगी। वहीं काका और काकु की देखभाल में भी कोई कसर न छोड़ी । बाबा को समय पर फीकी चाय मिल जाती,फिर परहेजी ,नाश्ता,खानाज।आई के चेहरे से भी निश्चिंतता का भाव स्पष्ट दिख रहा था।करण बेड पर पड़ा -पड़ा ईशा को देख सोच रहा था.-यह दुबली -पतली लड़की दिनभर फिरकनी सी घूम-घूम कर सबका कितना ध्यान रखती है फिर चेहरे पर थकान का कोई निशान नहीं।हमेशा मुस्कुराती रहती ।तभी रिया का चेहरा ईशा के आसपास झाँकने लगा। रिया तुमने मेरे साथ ऐसा क्यों किया?उसकी आँखों से आँसू लुढ़के और तकिया भीग गया ।

ईशा कनखियों से उसे देख रही थी।.

यह क्या बच्चे जैसे रोते हो?जो बीत गया उसे भूल जाओ।आई बाबा की ओर देखो ! जीवन बहुत सुंदर है ! बस उसमें से बीते कल का काला पन्ना निकाल कर फेंक दो ! फिर देखो !ईशा ने नरम कोमल हाथों से करण के बालों को सँवारा और गालों पर हल्की सी चपत लगा कर मुस्कुरा दी ।ईशा ने खिड़की के बाहर की ओर देखा-संध्या का समय !सूर्य का अवसान ! संध्या सिंदूर लुटा रही थी।क्षितिज से चंद्रमा भी विहंस झाँक रहा था।कितना सुंदर दृश्य!

देखो करण ! अरे मैं भी!

वह तीर सी बाहर गई और व्हील चेयर के साथ लौटी।आओ करण! हाथों का सहारा देकर ईशा ने करण को व्हील चेयर पर बैठाया।करण के मुख पर एक मुस्कान तिर गई ।चंद्रमा अपनी चाँदनी के साथ क्रीड़ा करने उतरा। चंद्रमा का दामन पकड़,चंद्रिका इतरा कर धरती पर नर्तन करने लगी। रिया का चेहरा फिर झाँकने लगा। उसने गर्दन झटक कर सब कुछ दूर ठेल दिया ।चलो करण सूप पी लो! गले पर नैपकिन लगा ईशा फूँक मार कर चम्मच से करण को सूप पिलाने लगी। करण कैसा है रे?क्या हो रहा है?आई की आवाज़ लहक रही थी ।करण माई सन फीलिंग बैटर नाउ!बाबा के स्वर में भी एक चहक थी ।हाँ आई-बाबा ! अब काफी अच्छा लग रहा है।

ईशा आई-बाबा के लिए पानी ले आई थी।आई ने तो आशीषों की झड़ी लगा दी ।मुस्कुराती ईशा एक तपस्विनी सी लग रही थी।निष्काम भाव से कार्यरत ।करण स्टिक के सहारे धीरे -धीरे चलने लगा । शाम को ईशा उसे कॉरीडोर में ले आई,जहाँ से बगीचे में गुलाब ,गेंदा, पिटूनिया,खिलखिलाते दिखाई दे रहे थे। इठला कर उड़ती काली चिड़िया, गुनगुनाती बुलबुल अंतस भिगो गए। मन-मस्तिष्क रंगीन सपनों में कहीं खो गया। होठों पर एक मुस्कान तिर गई।सहसा खिले गुलाबी गुलाबों में ईशा का खिला चेहरा दीख पड़ा ।

चलें वापस?थक गए होगे ? उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ईशा मुड़ गई ।

ईशा !ईशा !एक हाथ में छड़ी पकड़े करण ने दूसरे हाथ से ईशा का हाथ थाम लिया । मुझे साथ लेकर नहीं चलोगी तुमने मुझे नया जीवन दिया है ,सपने दिए हैं ,सपनों में रंग भरा है।मैं जानता हूँ कि मेरे पास तुम्हें देने के लिए कुछ नहीं है पर...।ईशा ने अपना हाथ करण के मुँह पर रख दिया -ज्करण बचपन से आज तक सिर्फ़ तुम्हें चाहा है ,सिर्फ़ तुम्हें! तुम ही मेरा जीवन संगीत हो उस संगीत के सातों सुर भी तुम ही तो हो। तुम ही मेरी सांसों को झंकृत करते हो जिनसे ये धड़कनें हैं। करण आई लव यू च्मुझे कुछ नहीं चाहिए सिर्फ तुम और तुम्हारा प्यार।

अपने सारे दर्द भुलाकर करण ईशा को अपलक निहार रहा था।शायद आश्चर्य ! शायद प्यार ! हाँ प्यार!

ईशा की बड़ी-बड़ी झील सी गहरी आँखों में अपनी छवि देख रहा था, जहाँ कोई शर्त नहीं,कोई स्वार्थ नहीं। था तो सिर्फ करण। ईशा की आँखों में डूबता-उतराता करण!दोनों एक दूसरे का का हाथ थामे ,जीवन संगीत की सरगम में आकंठ मज्जित मुस्कुरा रहे थे।नीचे मंदिर की घंटा ध्वनि का स्वर चारों दिशाओं में व्याप्त हो गया।

कविता

असुर हैं कि लगातार

रामेश्वरम तिवारी

अराति देशों के
बीच की लड़ाई
उस्तादों के नाक की बन गई है
दोनों में से कोई
अहं के शिखर से
नीचे उतरने को तैयार नहीं है।

धृतराष्ट्र के जाए
खुद मरेंगे और अपने साथ
निर्दोषों को ले डूबेंगे
पर नाक की ख़ातिर
लड़ने से बाज नहीं आने वाले हैं।

अपरूपा वसुधा की
किसी को कल परवाह थी
न आज किसी को है
और असुर हैं कि लगातार
देवलोक-सी वसुधा को
दोजख में बदलने पर आमादा हैं।

गांधीजी को समझना सरल है, अपनाना कठिन

दृष्टिकोण

राजेंद्र जोशी

स?वतंत्र पत्रकार हैं।

महात्मा गांधी ने जीवन में सादगी ओर स्वावलंबन का संदेश दिया था। उनके जीवित रहते एवं उनके न रहने के बाद भी उनके सैकड़ों अनुयायियों ने उनके संदेश का अनुसरण किया और आज भी कर रहे हैं। देश की आज़ादी के बाद जितने भी गांधी आश्रम ओर सर्वोदयी संस्थाएं स्थापित हुई वहाँ पर अपनी सेवाएं देने वालों के लिए खादी पहना अनिवार्य था। साथ ही आश्रम के अंतर्गत संचालित समस्त गतिविधियों में अपनी भागीदारी भी करनी होगी। इसके पीछे गांधीजी की सोच थी कि अपनी आवश्यकताओं को सीमित करो तो सुखी रहोगे। जैसे, कवि नीरज ने लिखा था, सामान जितना कम होगा सफ़र उतना आसान होगा।

देश की आज़ादी के बाद देश के कई राज्यों में गांधीवादियों ने उनके विचारों के अनुसरण हेतु कई आश्रम संस्थाएं प्रारम्भ की थी। उनका स्पष्ट संदेश था कि अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं के द्वारा श्रम आधारित होना चाहिए। मोटा पहनो ओर मोटा खाओ से आशय था कि खुद के द्वारा सूत कातो ओर खुद ही अपना अनाज पीसो। यह सब सामूहिक भागीदारी से होने वाले कार्य थे जो कि सालों साल बिना किसी दबाव या आर्थिक सहायता के संचालित होते रहे। उन आश्रमों व संस्थाओ में से एक का मैं चश्मदीद रहा हूं। मेरा जन्म ऐसी ही एक संस्था में हुआ था। आश्रम की गतिविधि सुबह पाँच बजे सामूहिक सर्वधर्म प्रार्थना से शुरू होती थी। उसके बाद श्रमदान ओर कार्य विवरण प्रस्तुत होता था। यानी कि किसने क्या किया उसका लेखा जोखा। यह स्वयं कार्यकर्ता अपनी डायरी या कॉपी में लिखता था। संस्था की महिलाओं के ज़िम्मे अनाज साफ़ करने,पिसने से लगाकर रसोई का कार्य सम्भालने तक की ज़िम्मेवारी होती थी। आज की भाषा में कम्यूनिटी किचन। भोजन सादा एवं बिना मिर्च वाला होता था। भोजन उपरांत अपने बर्तन स्वयं साफ़ करना सभी के लिए अनिवार्य होता था चाहे वह अतिथी क्यों न हो। उसे भी संस्था कार्य में भागीदारी करनी होती थी। भोजन शाला में एक स्लोगन लगा था,ज्फोकट खावे चोर कहावे।ज्ज यानी मुफ्त का खाना चोर कहलाना है।

इन संस्थाओं में देशभर से कार्य विशेष के पारंगत व्यक्तियों को कार्य करने व कार्य सिखाने के लिए बुलाया जाता था। हमने देखा उसमें प्रमुख रूप से सूत से कपड़ा बनाना, घानी के माध्यम से तेल निकालना, गन्ने से गुड़ बनाना, साबुन बनाना, गैस प्लांट के माध्यम से ईंधन और प्रकाश की व्यवस्था करना आद। साठ-सत्तर के दशक में चूल्हे और चिमनी के जमाने में गैस से खाना बनना और रोशनी के लिए लाइट जलना एक करिश्मा सा लगता था। अपने हाथों से जूते-चप्पल बना कर पहनना और नीम-बबलू के पेड़ों की टहनियों से दातून करना, परम्परागत भारतीय खेल जैसे कबड्डी, खोखो,कुश्ती, दौड़ के माध्यम से युवाओं को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहना सिखाया जाता था।

अब न तो ऐसी गांधी संस्थाएं बची है और न ही स्वावलंबन व स्वदेशी पर कार्य करने वाले बचे हैं। जो भी संस्थाएं बची हैं उनमें आधुनिकता नजर आती है। हो सकता है कि देश के किसी कोने में यह अलख अभी भी जागृत हो। यह भी महत्वपूर्ण है कि आज भी कुछ ऐसे व्यक्तित्व समाज में बचे हैं जो इस दर्शन को ज़िंदा रखे हुए हैं।

कुछ दिन पूर्व मुझे भोपाल में ऐसे ही विलक्षण व्यक्तित्व से मिलने और उन्हें सुनने का अवसर मिला। ये व्यक्तित्व हैं, दक्षिण भारत में जन्मे और गुजरात को कर्म भूमि बनाने वाले, कई भाषाओं के साथ धारा प्रवाह हिंदी बोलने वाले, अर्थशास्त्र में पीएचडी, गुजरात विद्यापीठ के भूतपूर्व कुलपति डॉ. सुदर्शन आयंगर। डॉ. आयंगर को देख कर कोई नहीं कह सकता है कि ये किसी विश्व विधालय में कुलपति रह चुके हैं और इतने विद्वान होंगे। साधारण खादी का कुर्ता-धोती और सामान्य चप्पल पहनने वाले डॉ. आयंगर सामान्य पहनावे में विशिष्ट हैं। जब वे बोलते हैं तो सैंकड़ों की उपस्थिति वाले सभागार में सन्नाटा हो जाता है। सभी एकाग्रता से उन्हें सुनते हैं। उनका वक्तव्य खत्म हो जाता है मगर सुनने की लालसा खत्म नहीं होती है। आज के समय में ऐसा कम ही नज़र आता हो जहाँ जेनजी की उपस्थिति ज़्यादा हो।

डॉ. आयंगर का कहना है कि गांधी को समझना सरल है लेकिन उसे अपनाना कठिन है। आज हमें गांधी के बताए रास्ते पर चलना है तो अपनी आवश्यकताओं को सीमित करना होगा। बाज़ार आधारित वस्तुओं को त्याग कर स्वावलंबन अपनाना होगा। सुबह से लगाकर रात तक हमें पराधीन बनाने का काम चल रहा है। कोई भी अपनी पसंद से नहीं बल्कि बाजार के गढ़े गए विज्ञापनों के आधार पर चल रहा है। आपने कहा कि जीवन में जो प्राप्त है वो ही पर्याप्त है। आधुनिक साधनों के पीछे मत भागो। स्वयं क्या बेहतर कर सकते हो उसे करो। गांधीजी ने कोट पेंट न पहना हो ऐसी बात नही है लेकिन उसको त्यागने की बात भी जानना ज़रूरी है। आज खादी लगती महँगी है लेकिन है सस्ती। आपने दुनिया में तेल उत्पादों से बन रही सामग्री से बचने का आग्रह किया।

डॉ. आयंगर का मानना है कि सादगी को प्रारम्भ करना है तो वह स्वंय से हो सकती है। आप पढ़कर या भाषण देकर सादगी नहीं अपना सकते हो। इसे अमल में लाना होगा तभी आप अपने लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ सकते हो।

देह रुकी, मन बह चला- मन की अनवरत यात्रा का काव्य

पुस्तक समीक्षा

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

समीक्षक

संवाद करने के लिए प्रेरित करती है। इस संग्रह की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सरल, सहज और प्रवाहपूर्ण भाषा है। कवि ने कहीं भी अनावश्यक शब्दाडंबर या कठिन प्रतीकों का सहारा नहीं लिया। यही कारण है कि साहित्य के नए पाठक भी इन कविताओं को बिना किसी कठिनाई के पढ़ और समझ सकते हैं। हर कविता सीधे हृदय तक पहुँचती है और पढ़ने के बाद देर तक मन में गूँजती रहती है।

समकालीन हिंदी कविता में रविकांत राऊत एक ऐसे कवि हैं, जिनकी लेखनी जीवन के साधारण अनुभवों में भी असाधारण संवेदनाओं का स्पर्श खोज लेती है। वे जटिल भावों को भी सहज और सरल भाषा में व्यक्त करने की अद्भुत क्षमता रखते हैं। उनका कविता-संग्रह च्देह रुकी, मन बह चला इसी संवेदनशील दृष्टि और सृजनात्मक परिपक्वता का सुंदर उदाहरण है। यह संग्रह केवल कविताओं का संकलन नहीं, बल्कि मनुष्य के अंतर्मन की यात्रा का जीवंत दस्तावेज़ है।

इस संग्रह में कुल 46 कविताएँ संकलित हैं। स्पर्श से पहले, ख्वाबों का मिलन, डर लगता है, पतझड़, स्त्री के मन की राहें, अनाम ख़त, सत्य के अँधेरे में खिलते गुलाब, समय का सच, आत्मज्ञान, बोधिवृक्ष, रौशनी और कुछ तो बात रही होगी जैसी रचनाएँ जीवन के विविध रंगों को बड़ी आत्मीयता से सामने लाती हैं। हर कविता अपने भीतर एक अलग भावलोक रचती है और पाठक को कुछ देर ठहरकर स्वयं से संवाद करने के लिए प्रेरित करती है। इस संग्रह की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सरल, सहज और प्रवाहपूर्ण भाषा है। कवि ने कहीं भी अनावश्यक शब्दाडंबर या कठिन प्रतीकों का सहारा नहीं लिया। यही कारण है कि साहित्य के नए पाठक भी इन कविताओं को बिना किसी कठिनाई के पढ़ और समझ सकते हैं। हर कविता सीधे हृदय तक पहुँचती है और पढ़ने के बाद देर तक मन में गूँजती रहती है।

जैसा कि पुस्तक का शीर्षक संकेत देता है, इसमें यह भाव बार-बार उभरकर आता है कि शरीर भले ही थककर रुक जाए, लेकिन मन कभी नहीं रुकता। वह स्मृतियों, सपनों, प्रेम, उम्मीद, प्रश्नों और आत्ममंथन

के साथ निरंतर बहता रहता है। यही विचार पूरे संग्रह को एक सूत्र में बाँधता है। कवि ने मन की इसी अनवरत गति को अत्यंत मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया है। प्रेम इस संग्रह का एक महत्वपूर्ण पक्ष है, किंतु यह केवल आकर्षण का प्रेम नहीं, बल्कि विश्वास, प्रतीक्षा, समर्पण और आत्मीयता का प्रेम है। वहीं उदासी भी यहाँ निराशा नहीं बनती, बल्कि जीवन को समझने और भीतर झाँकने का अवसर देती है। पतझड़, रंजिश, दुबकी यादें और गिरे पत्तों की गवाही जैसी कविताएँ जीवन के बदलते मौसमों का सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं। दूसरी ओर आत्मज्ञान, बोधिवृक्ष और प्रारब्ध जैसी रचनाएँ आत्मबोध और जीवन-दर्शन की ओर पाठक का ध्यान आकर्षित करती हैं।

संग्रह की एक और उल्लेखनीय विशेषता यह है कि प्रत्येक कविता आकार में अपेक्षाकृत छोटी होते हुए भी अपने भीतर गहरे अर्थ समेटे हुए है। कवि कम शब्दों में अधिक कहने की कला जानते हैं। यही कारण है कि इन कविताओं को पढ़ते समय ऐसा लगता है मानो वे किसी और की नहीं, हमारे अपने जीवन की ही कहानी कह रही हों।

वास्तव में रविकांत राऊत का यह संग्रह संवेदनाओं, आत्मीयता और जीवन-दर्शन का सुंदर संगम है। इसकी सरलता ही इसकी सबसे बड़ी शक्ति है। यह पुस्तक पाठक के मन में लंबे समय तक अपनी छाप छोड़ती है और यह विश्वास जगाती है कि देह चाहे थम जाए, पर मन की यात्रा कभी नहीं रुकती।

समीक्षक- नृपेन्द्र अभिषेक नृप
पुस्तक- देह रुकी, मन बह चला
लेखक- रविकांत राऊत
प्रकाशन- समृद्ध पब्लिकेशन,

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.-453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

रामायण में यज्ञ और सुवर्ण के ईंटो का हवन कुण्ड

वैदिक युग में रथ बनाने वाले रथकार कहे जाते थे। कई जगहों पर रथ के अनेक-अनेक अंगों का वर्णन भी मिलता रहा है। धुरा, पहिया, जुआ, रथमुख आदि का भी जिक्र है?। कलश, अमत्र (हांडी), ऊखा(कड़ाही), चमस आदि के उपयोग से एक समृद्ध गृहस्थी का परिचय भी मिलता है। गृहनिर्माण में प्रयोग होने वाली वस्तुओं के उल्लेख से भी बहुत सारी परतें खुलती हैं खैर परतें तो बहुत हैं जिसपर निरंतर अध्ययन की दरकार है फिलहाल वेदों की बात न करते हुए आज मैं महर्षि बाल्मीकि जी द्वारा रचित भगवान श्री राम के जीवन पर लिखित रामायण की बात करते हैं और देखते हैं कि वहाँ पर कला कहाँ-कहाँ और किस-किस रूप में दर्शित है। हालांकि पूरी बात इस एक आलेख में ही नहीं निकल पाएगी पर फिर भी शुरुआती बातें तो जरूर समेटने का प्रयास किया जाएगा।

वैदिक संहिताओं और धार्मिक पुस्तकों से तमाम तरीके के शिल्पों का जिक्र मिलता रहा है, जिनका प्रयोग वर्तमान में भी दृष्टिगोचर है। बड़े-बड़े रथों का प्रयोग हमेशा से होता रहा है। रथों के निर्माण में लगने वाली वस्तुओं का भी निर्माण होता रहा होगा। लकड़ियों या और भी वस्तुओं के अलग-अलग प्रयोग से चीजें निर्मित होती रही होंगी, जिसके निर्माण हेतु शिल्पी अपने हुनर का प्रयोग करते रहे होंगे। निर्मित वस्तु शिल्प ही तो होगा। वैदिक युग में रथ बनाने वाले रथकार कहे जाते थे। कई जगहों पर रथ के अनेक-अनेक अंगों का वर्णन भी मिलता रहा है। धुरा, पहिया, जुआ, रथमुख आदि का भी जिक्र है?। कलश, अमत्र (हांडी), ऊखा(कड़ाही), चमस आदि के उपयोग से एक समृद्ध गृहस्थी का परिचय भी मिलता है। गृहनिर्माण में प्रयोग होने वाली वस्तुओं के उल्लेख से भी बहुत सारी परतें खुलती हैं खैर परतें तो बहुत हैं जिसपर निरंतर अध्ययन की दरकार है फिलहाल वेदों की बात न करते हुए आज मैं महर्षि बाल्मीकि जी द्वारा रचित भगवान श्री राम के जीवन पर लिखित रामायण की बात करते हैं और देखते हैं कि वहाँ पर कला कहाँ-कहाँ और किस-किस रूप में दर्शित है। हालांकि पूरी बात इस एक आलेख में ही नहीं निकल पाएगी पर फिर भी शुरुआती बातें तो जरूर समेटने का प्रयास किया जाएगा।

महाराजा दशरथ जिनके बारे में महर्षि बाल्मीकि जी लिखते हैं कि इंद्र के अमरावती की तरह उन्होंने अपने नगरी को सजा रक्खा था। सजाने की बात पर ये तो अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है कि साज-श्रृंगार तब भी प्रमुखता के साथ होते थे। दशरथ के संपन्नता के बाबत कहना है कि च्संपन्नता इतनी कि कोई भी गरीब नहीं, कोई भी अज्ञानी नहीं। हर तरफ ज्ञान ही ज्ञान और ध्यान का बोलबाला था। कानों में कुण्डल, सिर पर मुकुट गले में पुष्प माला सभी लोग धारण करते थे। धारण करते थे तो जाहिर सी बात है ये सभी चीजें सृजित भी होती रही होंगी। सृजन की शुरुआत है तो और भी कलाओं के अंश मिलने के आसार हैं तो आइए यात्रा की शुरुआत की जाए और देखा जाए कि कला कहाँ-कहाँ और किस-किस रूप में नजर आती है।

कानों में कुण्डल, सिर पर मुकुट, गले में हार, हाथों और पैरों मे कड़े आदि के बनने के पूर्व उनकी कल्पना हुई होगी। डिजाइनिंग, स्केचिंग, मोल्डिंग, सांचा, आदि-आदि तमाम प्रक्रियाओं से गुजरने के बाद ये सभी वस्तुएं मूर्त रूप में आई रही होंगी हाँ ये बात अलग है कि ये सभी प्रक्रियाएं तब किसी और रूप या नाम के साथ रही हों या नहीं भी रही हों या कुछ अलग ही रहा हो पर सच्चाई तो यही है कि यदि सृजन है तो उसके पीछे या पूर्व की एक कल्पना भी जरूर रही होगी।

बाग-बगीचे और नगर के चारों ओर साखुओं के लम्बे-लम्बे, कठोर, मजबूत, भुरे रंग के, पानी में भी न गलने वाले पेड़ ऐसे जान पड़ रहे थे जैसे अयोध्या रूपिणी स्त्री करधनी पहने हो। अथाह सौन्दर्य की गढ़ थी अयोध्या। यह महापुरी बारह योजन (48 कोस यानी 96 मील) चौड़ी थी। यहाँ पर लम्बी-चौड़ी और अच्छी सड़कें थीं। सड़कों पर रोज ही जल छिड़क कर पुष्प बिछाए जाते थे। प्रमुख मार्गों पर बड़े-बड़े तोरणद्वार जो बारीक डिजाइनों से भरे हुए थे, बने हुए थे। महापुरी, अपनी रक्षा के लिए शिल्पियों द्वारा तैयार सब प्रकार के यंत्र और शस्त्र (सर्वयन्त्रायुधवतीमुपेतां सर्व शिर्पिभि-, बा.का. पं. स.-10) से भी संपन्न थी। ऊँची-ऊँची अट्टालिकाएँ, दुर्गम, मजबूत किले और गहरी एवं शत्रुओं के लिए कभी न फाँद सकने योग्य गहरी खाई जो नगरी को शत्रुओं से सुरक्षित करती थी, भी महाराज दशरथ के सक्षमता की कहानी बयाँ करती है और कलाकारों के दक्षता को भी उजागर करती है।

रत्न खचित महल और पर्वतों से शोभायमान थी यह नगरी। राजभवन सुनहरे रंगों से सजा हुआ था। सुनहरे रंगों के प्रयोग से मतलब यदि निकाला जाय तो रंग-सम्पन्नता भी उजागिर होती है। रंगों से संपन्न थे लोग और अयोध्या। नगाड़े, मृदंग, वीणा, पनस, आदि से संपन्न इस नगरी के टक्कर की दूसरी नगरी पूरे पृथ्वी पर अन्यत्र कहीं नहीं थी। बाल्मीकि जी कहते हैं कि इस जगह महाराज वैसे ही रहते थे जैसे स्वर्ग में इन्द्र वास करते थे।

प्रतापी एवं न्यायप्रिय राजा दशरथ के पास, बहुत समय गुजर जाने के बाद भी, वृद्धावस्था आने तक उनको कोई भी संतान नहीं थी। अयोध्या के भविष्य को लेकर दशरथ जब भी सोचते थे तो अंदर से काँप उठते थे। ऋष्य श्रृंग से पुत्रेष्टि यज्ञ की बात में उन्हें अपना भविष्य दिखाई पड़ा और महाराज गुरु वशिष्ठ से आग्रह कर बैठते हैं कि आप ही हम सभी से उम्र, अनुभव, ज्ञान आदि में श्रेष्ठ हैं और साथ ही हमारे गुरु भी हैं इसीलिए आप इस पूरे यज्ञकर्म को बड़े अच्छे तरीके से संपन्न करवा सकते हैं इसलिए च्हे गुरु श्रेष्ठ आपसे विनती है कि आप इस नेक कार्य को अपने हाथों में लें और अयोध्या को इस महासंकट से उबारें, अयोध्या के भविष्य को संवारें। महर्षि वशिष्ठ इस कार्य को खुशी-खुशी अपने हाथों में लेते हुए भविष्य के योजनाओं के क्रियान्वयन में जुट गए। वशिष्ठ जी ने वृद्ध और यज्ञकार्य में कुशल ब्राह्मणों को, परम धार्मिक और वृद्ध स्थापत्य विद्या (भवन निर्माण कला) में कुशल कारीगरों को, शिल्पियों को, लेखकों को, नटों को तथा बहुत जानने वाले और सच्चे शास्त्रवेत्ता ब्राह्मणों को बुला कर कहा कि आप लोगों के लिए महाराज की आज्ञा है कि, यज्ञकार्य में मनोयोग पूर्वक आप लग जाएँ। महर्षि वशिष्ठ जी की आज्ञा प्राप्त करते ही सभी गुणी जन अपने-अपने कार्यों में जुट गए। यज्ञ का कार्य और तैयारियाँ जोरों पर चलने लगीं। सभी अपने तरफ से शत-प्रतिशत देने में लगे हुए थे। अँकवार भर मोटी लकड़ी के एक्कीस खंभे गढ़े गए जिनमें छ- बेल के, छ- खैर के, छ- ढाक के, एक लिसोढ़े का और दो देवदारु की लकड़ियाँ थीं। ये सभी खंभे एक्कीस अरत्रि (मुट्ठी) ऊँचे थे। यज्ञशाला को सौंदर्य संपन्न बनाने हेतु चतुर, शिल्पियों, शास्त्रियों ने इन खंभों को कपड़ों, पुष्प, चंदन आदि से खूब-खूब सजाया था साथ ही सोने के पत्रों से मढ़वाया भी था। महर्षि बाल्मीकि जी लिखते हैं कि उस समय इनकी शोभा आकाश मंडल में सप्तर्षियों की तरह दीख पड़ती थी। जितनी बड़ी और अपेक्षित थी, उतनी ईंटों से शिल्पनिपुण ब्राह्मणों ने अग्निकुंड बनाया। यज्ञ में चतुर ब्राह्मणों ने सुवर्ण की ईंटों से पंख और गरुण भी बनाए। जिसका प्रयोग हवन कुण्ड के रूप में हुआ।

यज्ञ मंडप एवं हवन कुण्ड पर जब कला के इतने बारीक गुणों को देखा जा सकता है तो तोरण द्वार, महल, राजभवन, अट्टालिकाएं आदि के सौंदर्यीकरण पर अनुमान स्वत- ही लगाया जा सकता है। वीणा, मृदंग, नगाड़े आदि का जिक्र भी है मसलन संगीत के भी साक्षात प्रमाण हैं महर्षि बाल्मीकि के रामायण में।

संभवतः आगे बहुत कुछ ढूंढने का प्रयास होगा फिलहाल अभी हम जहाँ तक के कला की बात कर रहे हैं उसमें सरयू नदी के उत्तरी तट पर इस महान यज्ञ की दीक्षा ली गई थी।

प्रकाश पुरोहित

हवा हवाई, हवा हवाई, बस, हवाई-बस आई !

ढेर सारी हाइ-वे सड़कें और फ्लाय-ओवर पुल बना-बना कर देख लिया कि सिवाय बदनामी के कुछ हाथ नहीं आया तो झख मार कर या मजबूर होकर हमारे मंत्री नितिन गडकरी को यह फैसला लेना ही पड़ा कि हवा में उड़ने वाली बस लाने के सिवा कोई और चारा नहीं है।

हर काम का मुकर्रर वक्त होता है और गडकरी को लग रहा है कि तमाम सड़कों के गढ्ढे मुंह फाड़ने लगें या पुल बनने से पहले ही गिरने लगें तो बेहतर यही है कि हवाई बस उतार दी जाए। नासमझ कह रहे हैं कि हवाई जहाज हैं तो सही, लेकिन यह नहीं समझते कि हवाई चप्पल पहनने वाला हवाई जहाज में नहीं बैठता, फिर मोदीजी कितनी ही कोशिश कर लें। जिसे बस की आदत लग जाती है, वह किसी के बस में नहीं आता। हवाई चप्पल वाला तो बिलकुल नहीं।

हवाई बस की बात मुझे तो जम रही है कि मैं अभी तक बस के सिवा किसी और में कभी नहीं बैठा। हवाई जहाज का ऊपर उठना और नीचे उतरना ही इतना डरावना लगता है कि हिम्मत, बगैर सवाल पूछे ही, जवाब देने लगती है। हवाई अड्डे पर जिस तरह की आतंकवादियों की तरह जामा तलाशी ली जाती है और जितना इंतजार करवाया जाता है, उससे तो बेहतर है सड़क रास्ते से बस के जरिए पहुंच जाएं।

बस का बढ़िया है, टिकट नहीं भी लिया तो कंडक्टर बस में ही पैसे ले लेगा और अपनी सीट भी बैठने के लिए दे देगा, फिर भले ही टिकट ना दे या कुछ रियायत भी कर दे। जहां उतरना हो, हाथ दे कर उतर सकते हैं या हाथ दिखा कर चढ़ सकते हैं। हवाई जहाज की तरह नहीं कि दिल्ली से उड़े तो सीधे मुंबई या बंगलुरु !

हर घंटे बस रुकती है, चाय-पानी होता है और यात्री अपनी जेब से और ड्राइवर कंडक्टर का मुफ्त में। बस में ही समाजवाद बचा है कि कोई बिजनेस-क्लास या इकोनॉमी-क्लास नहीं। सभी एक समान।

इस नजरिये से देखें तो गडकरीजी की हवाई बस का भविष्य एयर इंडिया और इंडिगो से भी उज्वल है। मुझे तो इस बात में सिवाय फायदे के कुछ नजर ही नहीं आ रहा है। सबसे बड़ी बात, टोल टैक्स ही खत्म हो जाएगा, हवाई बस चूंकि हवा में ही उड़ेगी तो रोड टैक्स भी नहीं लगेगा और रोड यानी सड़क की भी तब क्या जरूरत रहेगी। सड़क पर पर गड्ढे हैं या पुल गिर गया, ऐसी खबर पढ़ने को लोग तरस जाएंगे। सरकार की बदनामी भी कम से कम इस मामले में खत्म हो जाएगी।

तब लोग आंदोलन भी नहीं करेंगे कि हमारे यहां सड़क या पुल नहीं है। हां, हमारे यहां हवाई बस स्टैंड शुरू किया जाए, यह मांग जरूर पैदा हो सकती है, लेकिन इसका स्तर भी तो टुच्ची मांगों से ऊपर ही होगा।

हो सकता है यह हवाई बस नान-ए सी हो कि खिड़की खुली रख कर गगन विशाल में विचरते हुए लोग गंतव्य तक पहुंचें। अब बस है तो घर देख कर रोकने के लिए भी निवेदन किया जा सकेगा कि अगली गली से चौथा मकान, रोक देना जरा ! हवाई जहाज में देख ही नहीं पाते हैं कि ड्राइवर कौन है, तब बस में तो हो सकता है अपने मुहल्ले के रहमान मियां या मोहन भिया नजर आ जाएं, क्योंकि इतने पायलट तो पैदा कर नहीं सकते, इन्हीं बस वालों को ट्रेंड किया जाएगा। तब यदि जल्दी होगी तो ड्राइवर से कह भी सकेंगे कि 'जोर से लगी है, थोड़ी तेज भगा ले', क्योंकि हवाई बस में प्लेन वाली सुविधा तो देने से रहे।

वैसे भी मौसम खराब होने से हवाई जहाज यहां, वहां भगाए जाते हैं,बस के साथ ऐसा नहीं हो पाएगा। बस को तो हर मौसम में चलते रहने की आदत होती है, फिर यह तो हवाई बस है। मुझे तो सबसे अच्छी बात यह नजर आ रही है कि हवाई जहाज का आसमान पर एकाधिकार खत्म होने वाला है। तब हम बस में बैठे-बैठे हवाई जहाज को अपने करीब से जाते देखेंगे। क्या भरोसा, तब हवाई बस को जहाज से ज्यादा भाव मिलने लगें और बाद के दिनों में आने वाली पीढ़ी यह पूछे कि ये हवाई जहाज क्या 'पुष्पक' की तरह होते क्या !

वक्रोक्ति

यशवंत गोरे

लेखक व्यंग्यकार हैं।

साहित्य का अलंकरण नहीं, अलगकरण समारोह

पुरस्कारों की घोषणा और अलंकरण समारोह के बीच की अवधि चयनित साहित्यकारों की मन स्थिति वैसी ही होती है जैसे शादी तय होने के बाद सगाई और शादी की अवधि में एक होने वाले दूल्हे और उसकी मंगेतर की होती है। अलंकरण समारोह की तिथि की घोषणा होते ही अलंकरण प्राप्त करने वाले साहित्यकार फिर एक बार अपने आभासी मित्रों को सोशल मीडिया पर सूचना डालकर फिर से बधाई की अपेक्षा करने लगते है। घोषित तिथि पर नगर का च्कवीन्द्र भवन का कागध्वनि सभागार खचाखच ऐसे लोगों से भर जाता है , जिन्हे अलंकरण दिया जाना है, जिन्हे पहले मिल चुका है और जिन्हे भविष्य में मिलने की आशा है । अगली पंक्ति में ऐसे वरिष्ठ साहित्यकार जिनके प्रोफ़ाइल में पुरस्कारों/ सम्मानों की सूचि लम्बी है, बैठाये जाते है। उसके बाद गले में नीली पट्टी में टंगे परिचय पत्र के साथ घूमने वाले पुरस्कृत होने वाले साहित्यकारों को जगह दी जाती है। ऐसे साहित्यकारों की बड़ी संख्या दिखाई देती है , जिन्हे अगले सालों में पुरस्कार मिलने की उम्मीद है। कुछ साहित्यकार अपने साथ एक साथी को लेकर अवश्य लाता हैं , वह कोई परिजन या साहित्यिक मित्र भी हो सकता है , जो पुरस्कार ग्रहण करते समय अपने मोबाइल पर फोटो अवश्य लें , क्योंकि तुरंत सोशल मीडिया पर जो डालना होता है।

जिस प्रकार शासकीय कर्मचारियों के लिए सरकार द्वारा डीए के एरियर की घोषणा होते ही उसका लाभ पाने वाले कर्मचारियों में ख़ुशी की लहर दौड़ जाती है वैसे ही साहित्य के पुरस्कारों की घोषणा होते ही साहित्यकारों में प्रसन्नता छा जाती हैं। क्योंकि साहित्यिक पुरस्कार भी डीए की तरह एरियर में ही दिए जाते है। घोषणा के साथ यह भी एक पुछल्ला रहता है कि डीए एरियर में मिलने वाली राशी आधी पीएफ में जमा होगी तो कुछ कर्मचारीयों में निराशा के भाव आ जाते है, वैसे ही जिन साहित्कारों के नाम पुरस्कारों की सूचि में नहीं होते निराश हो जाते है। सरकार के खजाने में मंत्रियों और अफसरों के लिए लग्जरी गाड़ियों , बंगलों की सजावट के लिए बजट में तो कोई कमी नहीं होती है परन्तु कर्मचारियों के डीए के भुगतान के लिए और साहित्य के पुरस्कारों की राशि के लिए बजट का बहाना बताकर टाल दिया जाता हैं। इसलिए डीए की तरह पुरस्कार भी दो -तीन साल के एरियर में दिए जाते है।

पुरस्कारों की घोषणा होते ही चयनित साहित्यकारों को सोशल मिडिया पर बधाइयों की बाढ़ सी आ जाती है। जिसका नाम चयनित सूची में नहीं होता वे बन्दर बाँट अँधा बाटे रेवड़ी जैसे कमेंट कर अपनी भड़ास निकाल लेते है। पुरस्कारों की दुनिया में हमेशा रचनाकार गरीबी रेखा से निचे ही रहता है। क्योंकि पुरस्कार मिलते ही दूसरे ज्यादा पुरस्कृत द्वारा खींची गई लाइन के नीचे आ जाता हैं।

पुरस्कारों की घोषणा और अलंकरण समारोह के बीच की अवधि चयनित साहित्यकारों की मन स्थिति वैसी ही होती है जैसे शादी तय होने के बाद सगाई और शादी की अवधि में एक होने वाले दूल्हे और उसकी मंगेतर की होती है। अलंकरण समारोह की तिथि की घोषणा होते ही अलंकरण प्राप्त करने वाले साहित्यकार फिर एक बार अपने आभासी मित्रों को सोशल मीडिया पर सूचना डालकर फिर से बधाई की अपेक्षा करने लगते है। घोषित तिथि पर नगर का कवीन्द्र भवन का कागध्वनि सभागार खचाखच ऐसे लोगों से भर जाता है , जिन्हे अलंकरण दिया जाना है, जिन्हे पहले मिल चुका है और जिन्हे भविष्य में मिलने की आशा है । अगली पंक्ति में ऐसे वरिष्ठ साहित्यकार जिनके प्रोफ़ाइल में पुरस्कारों/ सम्मानों की सूचि लम्बी है, बैठाये जाते है। उसके बाद गले में नीली पट्टी में टंगे परिचय पत्र के साथ घूमने वाले पुरस्कृत होने वाले साहित्यकारों को जगह दी जाती है। ऐसे साहित्यकारों की बड़ी संख्या दिखाई देती है , जिन्हे अगले सालों में पुरस्कार मिलने की उम्मीद है। कुछ साहित्यकार अपने साथ एक साथी को लेकर अवश्य लाता हैं , वह कोई परिजन या साहित्यिक मित्र भी हो सकता है , जो पुरस्कार ग्रहण करते समय अपने मोबाइल पर फोटो अवश्य लें , क्योंकि तुरंत सोशल मीडिया पर जो डालना होता है।

समारोह तय समय पर शुरू कैसे होता क्योंकि पुरस्कार संस्कृति विभाग के संस्कारित मंत्री द्वारा दिए जाने थे। संस्कार देने वाले संगठन से आये मंत्रियों के संस्कारों में कुछ कमी रह ही जाती हैं, इस कारण वे समय पर नहीं आ पाते। इस बीच समय का सदुपयोग करते हुए , पुरस्कृत होने वाले साहित्यकार और जो भविष्य में अपेक्षा रखते है संस्था प्रमुख और अन्य साहित्यकारों के साथ सेल्फी/ फोटो खिंचवाने लगते है । मंच से घोषणा की गई कि मंत्री जी शीघ्र ही हमारे बीच होंगे तब तक संस्था के प्रमुख पुरस्कारों की पृष्ठभूमि और संस्था की उपलब्धियों के बारे में अपना वक्तव्य देंगे। संस्था प्रमुख को अपनी बहादुरी के किस्से सुनाने के लिए पर्याप्त समय मिल गया था। संस्था प्रमुख बीच -बीच में यह घोषणा जरूर कर रहे थे कि मंत्री जी शीघ्र ही हमारे बीच होंगे। तभी पीछे से उदघोषक ने धीरे से कुछ कान में आकर कहा , उन्हें लगा शायद समय ज्यादा लेने के कारण बैठने के लिए इशारा कह रहे हैं, परन्तु मामला यह था कि मंत्री के नहीं आने की सूचना आ चुकी थी। संस्था प्रमुख ने क्षमा मांगते हुए घोषणा की कि मंत्री जी को किसी आकस्मिक बैठक में जाना पड़ा है अतः मंत्री जी नहीं आ पा रहे है। पुरस्कार वितरण के लिए सामने बैठे एक वरिष्ठ साहित्यकार से निवेदन कर मंच पर आने का आग्रह किया। आजकल साहित्यकारों में ऐसे साहित्यकार बहुत मिल जायेंगे जो वरिष्ठ पहले हुए और साहित्यकार बाद में। इसलिए यह चयन करना कठिन होता है कि वे वरिष्ठ अपने सृजन के कारण है या उम्र के कारण।

आखिरकार अलंकरण समारोह पूरी गरिमा के साथ संपन्न हुआ। क्योंकि कार्यक्रम में पूर्व में पुरस्कृत , आज के कार्यक्रम में अलंकृत एवं जिनका चयन नहीं हुआ उनकी सबकी गरिमा का पूरा का ख्याल रखा गया था। पूर्व में पुरस्कृत , आज के समारोह में पुरस्कृत , जो पुरस्कृत नहीं हो पाए , जिनकी कोई पुस्तक अभी तक प्रकाशित नहीं हुई , जिन्हे अलंकरण प्राप्त हुआ उन्हें बधाई देने वाले , सब अलग -अलग स्पष्ट नजर आ रहे थे। ऐसा लग रहा था यह अलंकरण समारोह न होकर साहित्यकारों का अलगकरण समारोह हो। साहित्यकारों की कई श्रेणियां होती है। डॉक्टरों की तरह रचनाकारों में भी विशेषज्ञ होते है कवि , गीतकार , ग़ज़लकार , कोई दोहे लिखने के विशेषज्ञ होते है , निबंधकार , व्यंग्यकार , (इस विधा में लिखने वालों साहित्यकार कुछ ज्यादा ही पाए जाते है)। हर रचनाकार इस विधा में हाथ आजमाना की कोशिश कर रहा है। कुछ रचनाकार नगर की हर साहित्यिक संस्था से जुड़ने की लिए हर विधा में कुछ - न - कुछ लिखने लगते है। नगर की हर साहित्यिक के कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति अवश्य दर्ज करते है। हर साहित्यिक संस्था में पद पाने की कोशिश भी करते लगते हैं। यदि किसी संस्था में पद नहीं मिलता है , तो अपनी एक अलग साहित्यिक संस्था खड़ी कर लेते है। अपनी संस्था बनाने के लिए करना क्या होता है , एक केवल बैनर ही तो बनाना होता है। दो चार महीने में अपने कुछ साहित्यिक मित्रों को बुलाकर एकाध कार्यक्रम कर लो सोशल मीडिया में अपलोड कर लो , छोटे - बड़े अख़बारों में अपनी फोटो के साथ खबर छपवा दो , मौका मिले तो सरकार के संस्कृति विभाग से थोड़ा बहुत अनुदान झटक लो। कार्यक्रमों की अध्यक्षता , मुख्य अतिथि , सारस्वत अतिथि , विशेष अतिथि के लिए योग्यता प्राप्त हो ही जाती है। कुछ रचनाकार दो-चार सम्मान मिलने के बाद अपने नाम के आगे डाक्टर भी लिखने लगते है।

साहित्यकारों की उत्पत्ति भी कई प्रकार से होती है कुछ को विरासत में ही मिलती है। ऐसे साहित्यकारों को अपनी रचनाओं के प्रकाशन के लिए ज्यादा संघर्ष और इंतजार नहीं करना पड़ता। अपने पूर्वजों की रचनाओं को अपने नाम से छपवाने पर भी कोई रचना चोरी का दाग नहीं लगता। जिस प्रकार राजनीति में पारिवारिक पार्टियों के लिए बिना कोई संघर्ष किये सब कुछ मिल जाता है। ऐसे साहित्यकार भाग्यशाली होते है। कुछ अधिकारी नौकरी में रहते अपने पदों पर रहने के कारण साहित्यकार बन जाते है। इस श्रेणी में वे लोग आते है जो विभागों में जनसम्पर्क अधिकारी ,राजभाषा अधिकारी या ऐसे पदों पर रहे हो जहाँ साहित्यकारों से पाला पड़ता रहा हो या उनके बॉस साहित्यकार रहे हो। पत्रकारिता करते -करते सृजन करने वाले भी साहित्कार कहलाने लगते है। साहित्यिक कार्यक्रमों का संचालन करते हुए लम्बे अनुभव के कारण ऐसे संचालक भी कुछ दिनों बाद साहित्यकार की श्रेणी में आ जाते है। 2020 के बाद एक नए प्रकार के साहित्यकारों की उत्पत्ति हुई है। जो लोग कोरोना के वायरस से बच गए , परन्तु उनके शरीर में जो सृजन धर्मी का वायरस था अचानक क्रियाशील हो गया और सृजन में लिप्त हो गए। साहित्यकार बन गए , पुस्तकें प्रकाशित होने लगी। साहित्यिक संस्थाओं द्वारा दिए जाने वाले पुरस्कारों के लिए प्रविष्टियों की बाढ़ सी आने लगी। प्रकाशकों की दुकान चल पड़ी , नए- नए प्रकाशक बाजार में आ गए। गोष्ठियों , साहित्यिक कार्यक्रमों से ज्यादा पुस्तक विमोचन के कार्यक्रम ज्यादा होने लगे। पुस्तक मेलों में पुस्तकें सजने लगी है।

अलंकरण समारोह समाप्त होने के बाद जिन्हें पुरस्कार मिले थे, वे प्रसन्नता के साथ कवीन्द्र भवन के सामने एवं अन्य पुरस्कृत साहित्यकारों के साथ अलंकरण सहित फोटो खिचवाने एवं एक दूसरे को बधाई देने वालों की बड़ी चहल पहल थी। जिनका चयन पुरस्कारों के लिए नहीं हुआ उनके चेहरों पर निराशा स्पष्ट झलक रही थी। वे संस्था प्रमुख को घेरे खड़े थे , अपनी मुलाकातों और रचनाओं की जानकारी देते हुए उनके साथ फोटो खिचवानें के लिए उत्सुक लग रहे थे। कुछ मीडिया फ्रेंडली साहित्यकार नगर के प्रमुख अख़बारों जैसे सुबह शाम पुरानी दुनिया दैनिक रेल का सफर काली भूमि सुबह का अँधेरा दैनिक ऑस्कर जैसे अख़बारों में मुख्य अतिथि से अलंकरण प्राप्त करते हुए फोटो के साथ खबर छपवाने के लिए मोबाईल पर ही प्रेस नोट बनाने में व्यस्त हो गए। उनके लिए दैनिक ऑस्कर में फोटो छपना किसी ऑस्कर पुरस्कार से कम नहीं है। कुछ साहित्यकार कंधे पर एक झोला जिसमें अपनी प्रकाशित पुस्तकें , जिनका चयन पुरस्कार के लिए नहीं हुआ , घूमते हुए बाटतें, फोटो खिंचवाते दिखें , जो सोशल मीडिया पर डालकर उसे प्रसारित करें , ताकि अगली बार पुरस्कार के लिए चयनित हो सके।

इस प्रकार अगले दो- चार साल के इंतजार के साथ यह अलगकरण समारोह माफ़ करना अलंकरण समारोह संपन्न हुआ।

नेफ्रों आईसीयू का निर्माण सात दिवस में पूरा करायें : उप मुख्यमंत्री

भोपाल । उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने सुपरस्पेशलिटी हास्पिटल रीवा का निरीक्षण किया। उप मुख्यमंत्री ने विभिन्न वार्डों में रोगियों से भेंटकर उनका हालचाल जाना। उप मुख्यमंत्री ने अस्पताल की दूसरी मंजिल में नेफ्रोंलाजी विभाग का निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि इसकी आईसीयू का सात दिन निर्माण करायें। कार्यपालन यंत्री लोकनिर्माण विभाग तथा अधीक्षक सुपरस्पेशलिटी अस्पताल दोनों कक्षों की साफ सफाई कराकर आवश्यक उपकरण और बेड तत्काल लगायें। यहां 15 बेडों का आईसीयू यूनिट शुरू करायें। अस्पताल के नये भवन का निर्माण कार्य पूरा हो जाने पर लगभग 200 बेड की वृद्धि होगी। तब तक पूराने भवन में रोगियों के लिए आवश्यक व्यवस्थायें सुनिश्चित करें। निरीक्षण के समय अस्पताल के अधीक्षक डॉ. अक्षय श्रीवास्तव, संजय गांधी अस्पताल के अधीक्षक डॉ. राहुल मिश्रा, डॉ. रोहन द्विवेदी, डॉ. बीडी त्रिपाठी तथा अन्य चिकित्सक उपस्थित रहे।

उप मुख्यमंत्री विभिन्न कार्यक्रमों में हुए शामिल

रीवा । उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल हुए । उप मुख्यमंत्री ने आचार्य श्री विजयसागर जी महाराज के परम शिष्य आचार्य श्री समयसागर महाराज जी तथा श्री अतुल सागर जी महाराज के भव्य मंगल प्रवेश में शामिल हुए। उप मुख्यमंत्री ने जैन संत मुनियों से आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ने कहा कि भारतीय संस्कृति में संतो का सान्निध्य समाज को सदाचार सयम और कल्याण का मार्ग दिखाता है। ऐसे पावन अवसर अध्यात्मिक चेतना और सामाजिक संरचना को मजबूत करते हैं।

उप मुख्यमंत्री ने श्री विजय मिश्रा के निवास स्थल पर अखण्ड रामचरित्र मानस में भागीदारी निभाई। इसके बाद उप मुख्यमंत्री ने श्री विनायक प्रसाद तिवारी के सगरा स्थित निवास पहुंचकर उनकी दिवंगत माता जी को श्रंद्धाजलि अर्पित की तथा परिवारजनों को सांत्वना दी। उप मुख्यमंत्री ने इसके बाद कुबेर तालाब में आयोजित कार्यक्रम में कर्मचारी संघ के अध्यक्ष स्व. राघवचरण मिश्र को श्रेद्धासुमन अर्पित किये।

उप मुख्यमंत्री ने संजय गांधी अस्पताल पहुंचकर श्री कमलेश सचदेवा की बहन की स्वास्थ्ब की जानकारी ली। उप मुख्यमंत्री ने मिनर्वा अस्पताल जाकर वहां उपचार करा रहे श्री अमित कोहली के पिता जी के स्वास्थ्र की जानकारी ली तथा उनके शीघ्र स्वस्थ्य होने की कामना की।

उप मुख्यमंत्री ने हरिहरपुर में प्राकृतिक खेती का किया अवलोकन

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने हरिहरपुर में प्राकृतिक खेती के विभिन्न प्रकल्पों का निरीक्षण किया। उन्होंने प्राकृतिक विधि से उत्पादित विभिन्न सब्जियों हल्दी आदि के संबंध में जानकारी ली। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि प्राकृतिक खेती से ही हमे शुद्ध अनाज और फल सब्जियां प्राप्त होंगी। इनके सेवन से हम सब स्वस्थ्र रहेंगे। गौमाता की सेवा और प्राकृतिक खेती को हम सब किसान अपनी जीवन पदद्धति का अंग बनाये। प्राकृतिक खेती से ही माटी का भी स्वास्थ्व सुधरेगा। रासायनिक खाद और कीटनाशकों के फसलों में उपयोग से माटी को पोषक बनाने वाले सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। प्राकृतिक खेती से माटी में धीरे-धीरे इन जीवाणुओं का विकास होता है। इनके द्वारा मिट्टी को पोषक और मुलायम बनाया जाता है जिसके कारण मिट्टी की जलधारण क्षमता बढ़ती है।

आयुष विभाग की समीक्षा में कलेक्टर ने दिए सख्त निर्देश

बैतूल। कलेक्टर की अध्यक्षता में शुक्रवार को आयुष विभाग की समीक्षा बैठक आयोजित हुई, जिसमें जिला आयुर्वेद चिकित्सालय और रोगी कल्याण समिति से जुड़े विभिन्न विषयों पर महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। बैठक में पंचकर्म, शल्य तंत्र एवं शालाक्य तंत्र में होने वाली प्रक्रियाओं की दरें निर्धारित करने, चिकित्सालय परिसर में सीसीटीवी कैमरे लगाने तथा आयुष विंग की नई रोगी कल्याण समिति के गठन को स्वीकृति दी गई। बैठक में देवारण्य योजना एवं जिला आयुष मिशन सोसायटी की प्रगति की भी समीक्षा की गई। कलेक्टर ने आयुष विभाग की कार्यप्रणाली पर आवश्यक निर्देश देते हुए बताया कि वे स्वयं जिले की सभी आयुष संस्थाओं का निरीक्षण करेंगे।

मानसरोवर द स्कूल में निकली भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा, छात्रों-अभिभावकों ने खींचा रथ

इस्कॉन टेंपल के संयुक्त तत्वावधान में हुआ यात्रा का आयोजन

बैतूल। मानसरोवर द स्कूल और एइस्कॉन टेंपल के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा का आयोजन स्कूल परिसर में श्रद्धा और उत्साह के साथ किया गया। आयोजन में विद्यालय के छात्र-छात्राओं, अभिभावकों, शिक्षकों और प्रबंधन ने बड़ी संख्या में सहभागिता की। पूरे कार्यक्रम के दौरान विद्यालय परिसर भक्तिमय माहौल में डूबा रहा और भगवान जगन्नाथ के जयघोष लगातार गूंजते रहे। रथ यात्रा का आयोजन इस्कॉन टेंपल से पधारे राहुल कुशवाह के मार्गदर्शन में किया गया। भगवान जगन्नाथ पुरी की विश्वविख्यात रथ यात्रा की परंपरा से प्रेरित होकर विद्यालय परिसर में विधि-विधान के साथ रथ यात्रा निकाली गई। विद्यालय के छात्र-छात्राओं और मानसरोवर द स्कूल के प्रबंधन ने श्रद्धापूर्वक भगवान जगन्नाथ का रथ खींचकर आयोजन में अपनी सहभागिता निभाई। कार्यक्रम में विद्यालय के चेयरमैन डॉ. विनय सिंह चौहान, डॉ. पुष्पलता साबले, प्राचार्य एस. वी. चंद्रशेखर सहित समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित रहीं। सभी ने भगवान जगन्नाथ की पूजा-अर्चना कर रथ यात्रा में भाग लिया तथा धार्मिक परंपराओं के महत्व पर प्रकाश डाला। चेयरमैन डॉ. विनय सिंह चौहान ने विद्यार्थियों को जानकारी देते हुए बताया कि यह यात्रा ओडिशा के पुरी धाम में भगवान जगन्नाथ, बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के भव्य रथों के साथ निकाली जाती है। मान्यता है कि रथ यात्रा के दौरान भगवान स्वयं अपने भक्तों के बीच आते हैं और उनके दर्शन करने तथा रथ खींचने से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है। यह यात्रा सामाजिक समरसता, सेवा और भक्ति का संदेश देती है, क्योंकि इसमें जाति, वर्ग और धर्म का भेदभाव नहीं होता तथा हर व्यक्ति भगवान के रथ को खींचने का अवसर प्राप्त करता है। इसी परंपरा से प्रेरित होकर विद्यालय प्रबंधन ने रथ यात्रा निकाली। रथ यात्रा के दौरान पूरा विद्यालय परिसर भक्तिरस में सराबोर नजर आया। छात्र-छात्राओं और अभिभावकों ने भगवान जगन्नाथ के जयकारों के साथ उत्साहपूर्वक यात्रा में भाग लिया। आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति, धार्मिक परंपराओं और आध्यात्मिक मूल्यों से जोडना रहा। पूरे आयोजन में श्रद्धा, अनुशासन और उत्साह का सुंदर संगम देखने को मिला।

जनगणना-2027 अंतर्गत जिला जनगणना हस्तपुस्तिका के लिए प्रशिक्षण प्रारंभ

बैतूल। जनगणना-2027 के अंतर्गत जिला जनगणना हस्तपुस्तिका तैयार किए जाने के उद्देश्य से कलेक्टर एवं प्रमुख जनगणना अधिकारी डॉ. सौरभ संजय सोनवणे के निर्देशन तथा अपर कलेक्टर एवं जिला जनगणना अधिकारी श्रीमती वंदना जाट के मार्गदर्शन में ग्राम एवं नगर निर्देशिका संबंधी आंकड़ों के संकलन, संचयन तथा डीसीएचबी पोर्टल संचालन एवं उपयोग संबंधी अलग-अलग चार्जों का एक दिवसीय प्रशिक्षण 17 जुलाई से प्रारंभ है। जिला योजना अधिकारी एवं अतिरिक्त जिला जनगणना अधिकारी नरेंद्र कुमार गौतम ने बताया कि यह प्रशिक्षण आगामी 28 जुलाई 2026 तक पीएमश्री शासकीय एमएलबी कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूल में निर्धारित विभिन्न बैचों में आयोजित किया जा रहा है। प्रशिक्षण में जनगणना कार्य निदेशालय, मध्यप्रदेश भोपाल से आए प्रशिक्षक श्री भरतलाल गौर एवं सुश्री शालिनी वर्मा द्वारा जिले के समस्त ग्रामीण एवं नगरीय चार्ज अधिकारियों तथा उनके द्वारा नामित क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को जिला जनगणना हस्तपुस्तिका की अवधारणा, क्षेत्रीय अधिकारियों की भूमिका, ग्राम एवं नगर निर्देशिका अनुसूचियों के संकलन, जिला जनगणना हस्तपुस्तिका मोबाइल ऐप एवं पोर्टल के संचालन का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है। साथ ही प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं का समाधान भी साथ साथ किया जा रहा हैं।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत जिला स्तरीय कार्यशाला आयोजित

बैतूल। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत 18 जुलाई को जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। उप संचालक कृषि राम गोपाल रजक ने बताया कि कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य फसल बीमा योजना अंतर्गत कृषकों को जागरूक करना एवं कृषकों को प्राकृतिक कारणों से होने वाले जोखिमों की जानकारी के बारे में बताना एवं व्यक्तिगत क्षति की भरपाई के लिए किस-किस तरीके से सूचनाओं को कैसे दर्ज करते हैं एवं सर्वे कैसे किया जाता है, इसकी जानकारी उपलब्ध कराना है। उन्होंने बताया कि बैतूल जिले में खरीफ मौसम 2026 कृषकों को फसल बीमा करवाने के लिए जागरूक किया जा रहा है और प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में फसल बीमा करवा कर जोखिमों एवं फसल बीमा के हित लाभ के बारे में जागरूक किया जा रहा है। वर्तमान खरीफ मौसम 2026 में

अधिसूचित फसलों के लिए कृषक द्वारा देय प्रीमियम राशि सोयाबीन के लिए 850 रुपए, मक्का 722 रुपए, धान सिंचित के लिए 838 रुपए, धान असिंचित 660 रुपए तथा अरहर के लिए 740 रुपए प्रति हेक्टेयर निर्धारित की गई हैं। फसल बीमा करवाने की अंतिम तिथि 31 जुलाई 2026 निर्धारित है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत बीमा करने के इच्छुक किसान अपनी निकटतम बैंक शाखा सहकारी समिति अधिकृत चैनल एवं जन सेवा केंद्र सीएससी एवं कृषक स्वयं भी राष्ट्रीय फसल बीमा पोर्टल पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर योजना से जुड़ सकते है। अऋणी कृषकों को फसल बीमा करवाने के लिए आवश्यक दस्तावेज बैंक पासबुक, फसल बुवाई प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, भू अधिकार दस्तावेज एवं बटाईदार किसान या किराए पर ली गई भूमि के लिए भूमि मालिक द्वारा शपथ पत्र दिया जाना अनिवार्य है। इस कार्यशाला में जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, दीपक कपूर, भोला खंडेलवाल, कृषि स्थाई समिति सभापति माधोराव नानकर, जनपद सदस्य मुलताई दिलीप पाटेकर, उप संचालक कृषि राम गोपाल रजक, वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक आर.डी. बारपेटे, नाबार्ड बैंक जिला प्रबंधक राहुल कुशवाहा, जिला सहकारी केंद्रीय बैंक महाप्रबंधक नीता निगम एवं एसबीआई जनरल इंश्योरेंस जिला प्रबंधक राकेश कुमार बेरवा एवं कृषक उपस्थित थे।

वरिष्ठ पत्रकार अरुण पटेल एवं अजय बोकिल का जन्मदिन मनाया गया

भोपाल। भोपाल प्रेस क्लब के तत्वावधान में वरिष्ठ पत्रकार अरुण पटेल एवं अजय बोकिल का जन्मदिन आज इंडियन कॉफी हाउस न्यू मार्केट में मनाया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार गिरीश उपाध्याय, सतीश सक्सेना, अलीम बज़मी, नासिर हुसैन, देशदीप सक्सेना, संजय सक्सेना, गोपी बलवानी, के के सक्सेना, हाकम सिँह गुर्जर, डी एन पाण्डेय, गोपाल जैन, ए यू खान सहित अन्य पत्रकार उपस्थित रहे। केक काट कर दोनों वरिष्ठ पत्रकारों को शुभकामनायें दी गईं।

शत-प्रतिशत मूंग खरीदी हो

केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराजसिंह चौहान का पुतला दहन, सांसद दर्शनसिंह आदि के विरुद्ध नारेबाजी

सोहागपुर। किसान कांग्रेस का शत-प्रतिशत मूंग खरीदी को लेकर 'गांव-गांव पुतला दहन' आंदोलन जारी है।इसी तारतम्य में आज सोहागपुर के मुख्य बाजार नर्मदापुरम पिपरिया राज्य मार्ग 22 पर शत-प्रतिशत मूंग खरीदी की मांग को लेकर किसान कांग्रेस ने जमकर विरोध प्रदर्शन किया। किसान कांग्रेस के तत्वावधान में हो रहे इस आन्दोलन को सभी कांग्रेस जनों ने एकत्रित होकर किसानों के साथ केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान के पुतले का दहन किया गया। पुतला दहन के अवसर पर केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराजसिंह चौहान के खिलाफ जमकर नारेबाजी करते करते यकायक क्षेत्रीय सांसद दर्शनसिंह के खिलाफ भी जमकर नारेबाजी की गई। इसी बीच पुतला दहन के समय पुलिसकर्मियों ने पुतले पर पानी डालने एवं पुतला छीनने की कोशिश असफल कोशिश की गई। किसान कांग्रेस के तत्वावधान में चलाए जा रहे निरंतर 'गांव-गांव पुतला दहन कार्यक्रम' के तहत क्षेत्र के किसान अपनी मांगों शत-प्रतिशत मूंग खरीदी की मांग को लेकर पूरी तरह अडिग नजर आ रहे हैं। उक्त आन्दोलन प्रदर्शन वरिष्ठ किसान नेता पुष्पराजसिंह पटेल एवं जिला किसान कांग्रेस अध्यक्ष बाबू चौधरी के संयुक्त नेतृत्व में आयोजित किए

जा रहे हैं। पुतला दहन के अवसर पर संबोधित करते हुए किसान नेताओं ने कहा कि भाजपा सरकार की वर्तमान नीतियां किसान विरोधी हैं।यह सरकार किसानों के हितों की निरंतर अनदेखी कर रही है। । मूंग की शत-प्रतिशत मूंग न खरीदे जाने से क्षेत्र का अन्नदाता आर्थिक संकट से जूझ रहा है। नेताओं ने चेतावनी देते हुए कहा कि जब तक सरकार किसानों की शत-प्रतिशत मूंग खरीदी की मांग को स्वीकार नहीं करती तब तक चरणबद्ध आंदोलन तथा गांव-गांव में केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराजसिंह चौहान आदि के पुतला दहन का सिलसिला जारी रहेगा। इस अवसर नगर किसान कांग्रेस अध्यक्ष गणेश अहिरवार, सेवादल ब्लॉक अध्यक्ष इरफान खान, जिला उपाध्यक्ष फ़ाग़ूराम अहिरवार पूर्व पार्षद मोहन कहार, ऋषभ दीक्षित, राकेश चौधरी, नीरज चौधरी, आकाश बमोरिया, वकील प्रांजल तिवारी, अर्पित तिवारी, देवांक सराठे , वकील देवान्शु शर्मा , अंकित पटेल, सचिन श्रोती, योगेश, शहीद खान कांग्रेसजन, युवा कार्यकर्ता और पीड़ित किसान उपस्थित थे।

आधी जुलाई बीत चुकी, जिले में सिर्फ 11.6 इंच बारिश

बारिश नहीं होने से खेतों की नमी हो रही खत्म, फसलों पर संकट

बैतूल। मानसून की दस्तक के बाद, बादलों की बेरुखी ने किसानों के माथे पर चिंता की लकीरें गहरी कर दी हैं। जुलाई का आधा महीना बीत चुका है, लेकिन झमाझम बारिश का इंतजार खत्म होने का नाम नहीं ले रहा। जबकि पिछले वर्ष जुलाई मानसून सीजन का सबसे अधिक बारिश वाला महीना साबित हुआ था। इस दौरान जिले में 377.1 मिमी वर्षा दर्ज की गई थी, जिससे खरीफ फसलों को पर्याप्त नमी मिल गई थी, लेकिन इस वर्ष हालात पूरी तरह विपरीत हैं। मानसून की देरी से दस्तक और जुलाई में लंबे ब्रेक के कारण अब तक जिले में केवल 294 मिमी बारिश ही दर्ज हुई है, जो जिले की 1083.9 मिमी औसत वार्षिक वर्षा का मात्र 26.78 प्रतिशत है। यानी सामान्य वर्षा के मुकाबले जिले में अभी 793 मिमी (73.22 प्रतिशत) बारिश की जरूरत है। जिले में बारिश पर ब्रेक के कारण कई इलाकों में बोवनी का काम अटक गया है। मौसम वैज्ञानिक के अनुसार, इस बार मानसून की ट्रफ लाइन की स्थिति अनुकूल नहीं है। नमी नहीं पहुंच पा रही है। लोकल सिस्टम सक्रिय नहीं है। पश्चिमी विक्षोभ कमजोर पड़ गया है। इसी कारण यह स्थिति बनी है। हालांकि, बंगाल की खाड़ी में एक नया कम दबाव का क्षेत्र बन रहा है। इसके अगले 4 से 5 दिनों में सक्रिय होने की संभावना है। यदि तब भी बारिश नहीं होती, तो जिले में हालात और गंभीर हो सकते हैं।

बारिश न होने से खेतों में नमी हो रही कम- बारिश नहीं होने से खेतों में नमी की कमी होने लगी है।

इससे खरीफ फसलों की बोवनी भी प्रभावित हो रही है। खेतों में नमी बनाये रखने के लिए किसानों को मजबूरी में कुएं एवं ट्यूबवेलों से पानी देना पड़ रहा है। कुछ किसान स्प्रिंकलर से भी खरीफ फसलों को पानी दे रहे हैं। इस समय पानी की सबसे अधिक आवश्यकता धान की फसल को है। किसान कुएं से पानी देकर धान की क्यारी भर रहे हैं। जिन किसानों के कुएं, ट्यूबवेल गर्मी में सूख गए थे, वे बारिश का इंतजार कर रहे हैं। मानसून ब्रेक से किसानों की मुश्किल बढ़ गई है, यदि आने वाले एक-दो दिनों में बारिश नहीं हुई तो खरीफ फसलों को बचाना मुश्किल हो जाएगा। इधर कृषि वैज्ञानिकों का कहना है कि जिन किसानों के पास सिंचाई की सुविधा है, वे हल्की सिंचाई कर मिट्टी में नमी बनाए रखें। सुबह या शाम के समय ही पानी दें। सीमित पानी होने पर फव्वारा (स्प्रिंकलर) विधि अपनाएं। खेतों में खरपतवार नियंत्रण करें। उपलब्ध नमी फसल को मिल सके। यदि वर्षा में और देरी होती है, तो किसान कम अवधि में तैयार होने वाली फसलों के बीज की व्यवस्था रखें।

बूंदाबांदी, लेकिन इतनी बारिश नहीं की बढ़ सके आंकड़ा- जिले में मानसून की लेट एंट्री के बावजूद जून माह के अंतिम सप्ताह और जुलाई माह के पहले सप्ताह में झमाझम बारिश हुई थी। 7 से 8 जुलाई सुबह 8 बजे तक जिले के सभी स्थानों पर बारिश हुई थी। 8 जुलाई की सुबह 8 बजे तक जिले में औसत 11.6 इंच बारिश हो चुकी थी। इसके बाद बारिश का दौर थम गया। 8 जुलाई के बाद इक्का-दुक्का स्थानों को छोड़ दें तो जिले में कहीं भी बारिश नहीं हुई है। हालांकि कहीं-कहीं बूंदाबांदी जरूर हुई है, लेकिन इतनी बारिश नहीं हुई कि बारिश का आंकड़ा बढ़ जाए। इधर बारिश नहीं होने से तापमान भी बढ़ गया है। खेतों की नमी गायब हो गई है। खेत सूखने लगे हैं। किसानों द्वारा धान, मक्का, सोयाबीन, मूंगफली सहित अन्य सभी खरीफ फसलों की बोवनी कर दी गई थी। फसलें उग भी गई है, लेकिन अंकुरण के बाद पानी नहीं मिलने से फसलों में ग्रोथ नहीं हो रही है। किसानों ने निंदाई भी करवा ली, वहीं खाद डालने की तैयारी कर ली है।

उप मुख्यमंत्री ने मार्तण्ड स्कूल तथा सेंट्रल लाइब्रेरी के निर्माण का लिया जायजा

भोपाल । उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने शासकीय मार्तण्ड उच्चतर माध्यमिक विद्यालय क्रमांक 2 रीवा में चल रहे निर्माण कार्यो का निरीक्षण किया। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि निर्माण कार्यों में गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखें। उन्होंने निर्माण एजेंसी को तय समय सीमा में निर्माण कार्य पूरा कराने की हिदायत दी। निरीक्षण के समय पूर्व पार्षद सतीश सिंह, जिला शिक्षा अधिकारी प्रेमलाल मिश्रा, प्राचार्य सुदामालाल गुप्ता तथा निर्माण एजेंसी के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। इसके बाद उप मुख्यमंत्री ने बैजूधर्मशाला के पास स्थित सेंट्रल लाइब्रेरी के नवीन भवन का निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि भवन का निर्माण कार्य पूरा करा कर 15 अगस्त तक लोकार्पण करायें। इसमें किताबों और पत्रपत्रिकाओं के पढ़ने की व्यवस्था के साथ ई-लाइवब्रेरी की व्यवस्था करें। अब सभी विद्यार्थी इंटरनेट के माध्यम से जानकारियाँ प्राप्त करते हैं। ई-लाइवब्रेरी उपकरण तथा कम्प्यूटर आपरेटर की 15 अगस्त तक व्यवस्था कर लें। निर्माण कार्य तय समय सीमा में अनिवार्य रूप से पूरा करायें। उप मुख्यमंत्री ने सेंट्रल लाइब्रेरी में अध्ययनरत बच्चों से भी संवाद किया। निरीक्षण के समय पार्षद श्री समीर शुक्ला, श्री राजगोपाचारी मिश्रा, लोक निर्माण विभाग तथा हाउसिंग बोर्ड के अधिकारी एवं निर्माण एजेंसी के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। सेंट्रल लाइब्रेरी के नवीन भवन का निर्माण पुर्नधनत्वीकरण योजना से 23 करोड़ 69 लाख रूपये की लागत से कराया जा रहा है। इसमें 160 सीटों में पठन-पाठन की व्यवस्था फर्निचर तथा अन्य उपकरण लगाये जायेंगे।

सिद्ध महराज के पास गौशाला की भूमि अतिक्रमणमुक्त कराने को लेकर एसडीएम डॉ बबीता राठौर से मुलाकात की

सोहागपुर। सोहागपुर ही नहीं क्षेत्र के विख्यात सिद्ध महाराज के समीप सिटीया गोहना गौशाला की लगभग 16 एकड़ शासकीय भूमि पर कथित अतिक्रमण एवं मजार निर्माण के संबंध में सकल हिंदू समाज एवं नागरिक संघर्ष समिति, के प्रतिनिधिमंडल ने माननीय अनुविभागीय अधिकारी डॉ बबीता राठौर से मुलाकात की इस प्रतिनिधिमंडल में समाजसेवी कृष्णा पालीवाल, पत्रकार संघ अध्यक्ष पवनसिंह चौहान, पत्रकार अमित बिल्लौरे,वकील शिवकुमार पटेल, समाजसेवी विशाल गोलानी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक के रीतेन्द् सिंह राजपूत, पूर्व जिला बजरंग दल रूपेश रघुवंशी, पूर्व बजरंग दल जिला सुरक्षा संयोजक आशीष पुरोहित आदि शामिल थे।प्रतिनिधिमंडल ने अनुविभागीय अधिकारी डॉ बबीता राठौर से आग्रह किया कि क्षेत्र के प्रसिद्ध सिद्ध महराज के समीप गौशाला

की करीबन 16 एकड़ भूमि पर कब्जा कर लिया गया। इस अतिक्रमण की संपूर्ण शासकीय भूमि का राजस्व अभिलेखों के अनुसार सीमांकन कराया जाए। सीमांकन के उपरांत यदि किसी भी प्रकार का अतिक्रमण पाया जाता है। ऐसी परिस्थिति में विधिसम्मत प्रक्रिया के तहत हटाकर पूरी भूमि को अतिक्रमणमुक्त कराया जाए। इसके साथ ही प्रतिनिधिमंडल ने कहा कि शासकीय भूमि का संरक्षण तथा उसका वैधानिक उपयोग सुनिश्चित किया जाना जनहित एवं प्रशासनिक उत्तरदायित्व का महत्वपूर्ण विषय है। प्रतिनिधि मंडल के प्रतिनिधि एवं वकील शिवकुमार पटेल ने बताया कि माननीय अनुविभागीय अधिकारी ने प्रतिनिधि मंडल को आश्वस्त किया है कि गौ शाला की संपूर्ण 16 एकड़ भूमि का राजस्व अभिलेखों के आधार पर परीक्षण एवं सीमांकन कराया जाएगा। सीमांकन के बाद जांच में यदि अतिक्रमण पाया जाता है। ऐसी परिस्थिति में शासन नियमानुसार आवश्यक कार्रवाई करके भूमि को अतिक्रमणमुक्त कराया जाएगा।

श्री पटेल ने आगे बताया कि सकल हिंदू समाज एवं नागरिक संघर्ष समिति प्रशासन से निष्पक्ष, पारदर्शी एवं कानूनसम्मत कार्रवाई शांतिपूर्ण एवं लोकतांत्रिक तरीके से अपनी बात प्रशासन के समक्ष आगे भी रखती रहेंगी

इन अभिनेत्रियों को मिला 'पद्मश्री' सम्मान

भारतीय फिल्म जगत का इतिहास हमेशा से ही सशक्त और प्रतिभाशाली महिलाओं के अभिनय से समृद्ध रहा है। सिनेमा के परदे पर अपनी अमिट छाप छोड़ने वाली और समाज को प्रभावित करने वाली इन कलाकारों को समय-समय पर देश के प्रतिष्ठित नागरिक सम्मानों से नवाजा जाता रहा है। भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला पद्मश्री देश का चौथा सबसे बड़ा नागरिक सम्मान है, जो कला, साहित्य, विज्ञान और समाज सेवा जैसे क्षेत्रों में असाधारण काम करने वालों को मिलता है।

हिंदी फिल्म उद्योग यानी बॉलीवुड की कई दिग्गज अभिनेत्रियों ने अपनी बेहतरीन अदाकारी और लंबे फिल्मी सफर के जरिए इस सम्मान को अपने नाम किया है। इस गौरवशाली सफर की शुरुआत समानांतर और व्यावसायिक सिनेमा दोनों में अपनी खास पहचान बनाने वाली दिवंगत अभिनेत्री स्मिता पाटिल से होती है। उनके लाजवाब अभिनय को देखते हुए उन्हें वर्ष 1985 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया था। आज भी उनका काम भारतीय फिल्म इतिहास की एक अमूल्य विरासत है।

इसके बाद, वर्ष 2000 में 'ड्रीम गर्ल' के नाम से मशहूर अभिनेत्री हेमा मालिनी को इस सम्मान से नवाजा गया। हेमा मालिनी ने न केवल फिल्मों में ब्लॉकबस्टर पारियां खेलीं, बल्कि शास्त्रीय नृत्य और सार्वजनिक जीवन में भी बेहद सक्रिय भूमिका निभाई। इस क्रम में, हिंदी और बंगाली फिल्मों में अपनी सादगी और अभिनय का जादू बिखेरने वाली दिग्गज अभिनेत्री शर्मिला टैगोर को वर्ष 2005 में इस सम्मान के योग्य चुना गया। वैश्विक पटल पर भारत का नाम रोशन करने वाली और अपनी खूबसूरती व अभिनय के लिए जानी जाने वाली ऐश्वर्या राय बच्चन को वर्ष 2009 में पद्म श्री प्रदान किया गया।

भारतीय सिनेमा की सबसे रहस्यमयी और प्रभावशाली अभिनेत्रियों में शुमार रेखा को वर्ष 2010 में उनके शानदार फिल्मी योगदान के लिए पद्मश्री मिला। उन्होंने अपने पूरे करियर में कई ऐसे किरदार निभाए जो आज भी मिसाल माने जाते हैं। इसके ठीक अगले साल, यानी वर्ष 2011 में दो बेहतरीन अभिनेत्रियों, काजोल और तब्बू को इस सम्मान से विभूषित किया गया।

काजोल ने जहां अपनी सुपरहिट और कल्ट फिल्मों से दर्शकों के दिलों पर राज किया, वहीं तब्बू ने अपने गंभीर, संजीदा और लीक से हटकर किए गए अभिनय के दम पर इंडस्ट्री में एक बेहद सम्मानित स्थान बनाया है। भारतीय सिनेमा की पहली 'महिला सुपरस्टार' कही जाने वाली दिवंगत अभिनेत्री श्रीदेवी को वर्ष 2013 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया था। श्रीदेवी ने हिंदी के साथ-साथ दक्षिण भारतीय सिनेमा में भी कई दशकों तक अपनी बादशाहत कायम रखी। इसके बाद वर्ष 2014 में हर किरदार में जान फूंक देने वाली अभिनेत्री विद्या बालन को इस प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

बॉलीवुड से लेकर हॉलीवुड तक अपनी एक्टिंग का लोहा मनवाने वाली ग्लोबल आइकॉन प्रियंका चोपड़ा को वर्ष 2016 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री दिया गया। प्रियंका ने अपने विविध किरदारों और मेहनत से भारतीय सिनेमा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान दी है। हाल के वर्षों की बात करें तो अपनी बेबाक अदाकारी और महिला केंद्रित फिल्मों के जरिए दर्शकों को प्रभावित करने वाली अभिनेत्री कंगना रनौत को वर्ष 2020 में इस सम्मान से नवाजा गया था।

वहीं, अपने दौर में कई यादगार और सशक्त भूमिकाएं निभाने वाली अभिनेत्री रवीना टंडन को वर्ष 2023 में पद्म श्री सम्मान प्रदान किया गया। ये सभी अभिनेत्रियां इस बात का जीता-जागता उदाहरण हैं कि जब प्रतिभा के साथ कड़ा परिश्रम और समर्पण जुड़ जाता है, तो कलाकार न केवल करोड़ों फैंस का दिल जीतते हैं, बल्कि देश के सर्वोच्च पायदान पर भी अपना नाम दर्ज कराते हैं। इन कलाकारों का यह सफर आने वाली पीढ़ियों के लिए हमेशा प्रेरणा स्रोत बना रहेगा।

'बॉर्डर 2' के बाद 'बॉर्डर 3' की तैयारी

साल 2025 में आई 'बॉर्डर 2' की शानदार कामयाबी के बाद जेपी फिल्म्स के बैनर तले एक बार फिर युद्ध के मैदान की गाथा बड़े पर्दे पर उतारने की तैयारी शुरू हो चुकी है। निर्माता निधि दत्ता ने आने वाले समय में पांच बेहतरीन प्रोजेक्ट्स बनाने का फैसला किया है, जिनमें सबसे ज्यादा चर्चा 'बॉर्डर 3' को लेकर हो रही है। यह फिल्म इस बार किसी काल्पनिक कहानी पर नहीं, बल्कि एक वॉर बायोपिक के रूप में दर्शकों के सामने आएगी, जो भारतीय सेना के जांबाज अधिकारी लेफ्टिनेंट जनरल हरबख्श सिंह की जिंदगी पर आधारित होगी।

निधि दत्ता की इस महत्वाकांक्षी योजना में 'बॉर्डर 3' के अलावा कई और दिलचस्प प्रोजेक्ट्स भी शामिल हैं। इनमें ऑपरेशन सिंदूर पर आधारित एक एयर फोर्स ड्रामा फिल्म, भारतीय इतिहास और पौराणिक कथाओं से जुड़ी एक ट्रेजर हंट फिल्म, और मशहूर फिल्म मेकर ओपी दत्ता (जेपी दत्ता के पिता) के जीवन पर एक लंबी सीरीज बनाने की प्लानिंग चल रही है। इस पूरी फेहरिस्त में 'बॉर्डर 3' सबसे खास है क्योंकि इसकी कहानी देश के एक ऐसे नायक की है, जिन्हें 'पंजाब का रक्षक' कहा जाता है। 1 अक्टूबर 1913 को जन्मे और वीर चक्र से सम्मानित लेफ्टिनेंट जनरल हरबख्श सिंह 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान वेस्टर्न कमांड के कमांडर थे।

उस युद्ध में उन्होंने अदम्य साहस दिखाते हुए पीछे हटने के सरकारी आदेशों को मानने से इनकार कर दिया था और दुश्मन पर जवाबी हमला बोल दिया। उनके इसी साहसिक फैसले की वजह से अमृतसर को पाकिस्तानी सेना के कब्जे में आने से बचाया जा सका था। युद्ध में उनके इस अभूतपूर्व योगदान के लिए साल 1966 में उन्हें पद्म विभूषण से भी नवाजा गया था। 14 नवंबर 1999 को देश के इस महान सपूत ने दुनिया को अलविदा कह दिया।

रियल बॉक्स

वैचारिक आजादी और सिनेमा पर लटकी तलवार

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

इन दिनों फिल्म 'सतलुज' का विवाद डिजिटल स्वतंत्रता के भ्रम पर उंगली उठा रहा है। मूल रूप से 'पंजाब '95' नाम से निर्मित और हनी त्रेहान द्वारा निर्देशित यह फिल्म मानवाधिकार कार्यकर्ता जसवंत सिंह खालरा के जीवन और पंजाब के एक बेहद संवेदनशील दौर पर आधारित है। केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड यानी सेंसर ने इस फिल्म को लेकर कड़ा रुख अपनाया और निर्माताओं को लगभग 127 कट लगाने का निर्देश दिया। लंबे कानूनी और प्रशासनिक संघर्ष के बाद, फिल्म को 'सतलुज' नाम से एक ओटीटी प्लेटफॉर्म पर रिलीज तो किया गया, लेकिन सुरक्षा कारणों और राष्ट्रीय संप्रभुता का हवाला देकर इसे डिजिटल स्पेस से भी हटा दिया गया। यह घटनाक्रम इस धारणा को खंडित करता है, कि ओटीटी प्लेटफॉर्म गंभीर और यथार्थवादी सिनेमा के लिए एक स्वतंत्र खिड़की साबित होंगे। अब तक डिजिटल माध्यमों को सिनेमाघरों की तुलना में अधिक उदार और सेंसरशिप से मुक्त माना जाता था, लेकिन सूचना प्रौद्योगिकी नियमों में हाल के संशोधनों ने सरकार को यह असीमित शक्ति दे दी कि वह 'सार्वजनिक व्यवस्था' या 'शांति भंग' की आशंका के आधार पर किसी भी डिजिटल सामग्री को प्रतिबंधित कर सके। यह स्थिति कला के क्षेत्र में एक प्रकार का 'चिलिंग इफेक्ट' पैदा करती है, जहां फिल्म निर्माता वित्तीय और कानूनी जोखिमों से बचने के लिए स्वयं ही अपनी रचनात्मकता को सीमित करने लगते हैं।

भारतीय सिनेमा के इतिहास के पन्ने पलटने पर ऐसे कई प्रसंग मिलते हैं, जहां सेंसर बोर्ड से 'हरी झंडी' मिलने के बावजूद फिल्मों को थियेटर तक पहुंचने से रोका गया। यह प्रवृत्ति दर्शाती है कि सेंसरशिप केवल एक संस्थागत प्रक्रिया नहीं, बल्कि राजनीतिक और सामाजिक दबावों से संचालित होती है। वर्ष 1993 के मुंबई बम धमाकों पर आधारित अनुराग कश्यप की फिल्म 'ब्लैक फ्राइडे' को सेंसर बोर्ड ने अनुमति दे दी थी, परंतु एक याचिका पर बॉम्बे हाईकोर्ट ने इसके प्रदर्शन पर तब तक के लिए रोक लगा दी, जब तक कि अदालती कार्यवाही पूरी नहीं हो गई। तर्क था कि फिल्म वास्तविक गवाहों और न्यायिक प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती है। इसी प्रकार, दीपा मेहता की फिल्म 'वाटर' जो वाराणसी की विधवाओं की दयनीय स्थिति का कथानक था, उसे देश में शूट नहीं करने दिया गया। भारी विरोध प्रदर्शनों, सेटों की तोड़फोड़ और संस्कृति विरोधी होने के आरोपों के कारण उत्तर प्रदेश में कानून-व्यवस्था की दुहाई देकर इसकी शूटिंग रोक दी। इस वजह से फिल्म को श्रीलंका में फिल्माया गया। आनंद पटवर्धन की डॉक्यूमेंट्री फिल्मों, विशेषकर 'राम के नाम' और 'फादर, सन एंड होली वॉर' के साथ तो यह संघर्ष दशकों लंबा चला। सेंसर बोर्ड की बाधाओं को पार करने के बाद भी दूरदर्शन जैसे सार्वजनिक प्रसारकों पर इनके प्रदर्शन को रोकने की हर संभव कोशिश की गई। हालांकि, इन मामलों में न्यायपालिका ने हमेशा अभिव्यक्ति की आजादी के पक्ष में निर्णय देकर कला का मार्ग प्रशस्त किया।

राजनीतिक नफा-नुकसान के लिए फिल्मों को बलि का बकरा बनाने के प्रसंगों में प्रकाश झा की 'आरक्षण' और मधुर भंडारकर की 'इंदु सरकार' भी शामिल है। 'आरक्षण' को जातिगत तनाव की आशंका के चलते कुछ राज्यों में प्रतिबंधित किया गया, जबकि 'इंदु सरकार' को 1975 के आपातकाल की पृष्ठभूमि के कारण भारी राजनीतिक विरोध और प्रदर्शनों का सामना करना पड़ा। संजय लीला भंसाली की 'पद्मावत' का विवाद राज्य सरकारों की लाचारी या राजनीतिक अवसरवादिता का सबसे उग्र उदाहरण रहा है। सेंसर बोर्ड के कहने पर फिल्म का नाम बदलने और कई संशोधनों के बाद 'यू/ए' सर्टिफिकेट दिया, इसके बावजूद, कुछ संगठनों के हिंसक विरोध के आगे झुकते हुए राजस्थान, मध्य प्रदेश और गुजरात जैसे राज्यों ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया था। अंततः सर्वोच्च न्यायालय को हस्तक्षेप करते हुए यह स्पष्ट करना पड़ा कि एक बार जब वैधानिक संस्था फिल्म को पास कर देती है, तो कानून-व्यवस्था बनाए रखना राज्य की प्राथमिक जिम्मेदारी है, न कि फिल्म को प्रतिबंधित करना।

बीते दशकों की तुलना में वर्तमान में सेंसरशिप का स्वरूप पूरी तरह बदल चुका है। पहले जहां सेंसरशिप केवल 'केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड' (सेंसर) की कैंची तक सीमित थी, वहीं अब एक अधिक खतरनाक 'समानांतर सेंसरशिप' का उदय हो गया। यह समानांतर व्यवस्था राजनीतिक दलों, धार्मिक संगठनों, वैचारिक समूहों और सोशल मीडिया की ट्रोल आर्मी के गठजोड़ से संचालित होती है। जैसे ही कोई फिल्म किसी संवेदनशील या लीक से हटकर मुद्दे को छूती है, ये समूह सड़कों पर हिंसा और डिजिटल स्पेस में 'बॉयकॉट' का अभियान शुरू कर देते हैं। राज्य सरकारें अक्सर कानून-व्यवस्था बनाए रखने की अपनी विफलता को छुपाने के लिए या बहुसंख्यक भावनाओं को तुष्ट करने के लिए शॉर्टकट रास्ता चुनती हैं और फिल्मों के प्रदर्शन पर रोक लगा देती हैं। इस अनिश्चितता के माहौल में सिनेमाघर और मल्टीप्लेक्स मालिक भारी वित्तीय नुकसान के डर से स्वयं ही कदम पीछे खींच लेते हैं। यह प्रवृत्ति सेंसर बोर्ड जैसी वैधानिक संस्था की प्रासंगिकता और स्वायत्तता पर गंभीर सवालिया निशान लगाती है। यदि बोर्ड द्वारा प्रमाणित फिल्म भी देश में सुरक्षित रूप से प्रदर्शित नहीं हो सकती, तो ऐसी नियामक संस्था के होने का तार्किक औचित्य समाप्त हो जाता है।

सिनेमाई पाबंदियों के इस विमर्श में कुछ अन्य महत्वपूर्ण प्रसंगों को जोड़ना प्रासंगिक होगा, जो यह दर्शाते हैं कि सत्ता चाहे किसी भी दल की हो, वह अपनी आलोचना के प्रति असहिष्णु रही है। वर्ष 1975 के आपातकाल के दौरान अमृत नाहटा की व्यंग्यात्मक फिल्म 'किस्सा कुर्सी का' का पूरा प्रिंट ही नष्ट कर दिया गया था। क्योंकि, वह तत्कालीन राजनीतिक नेतृत्व पर सीधा प्रहार करती थी। इसी तरह गुलज़ार की 'आंधी' को भी इंदिरा गांधी के जीवन से समानताएं दिखाने के भ्रम के कारण प्रतिबंधित कर दिया गया था। सेंसरशिप की यह राजनीति केवल राष्ट्रीय स्तर तक सीमित नहीं, बल्कि क्षेत्रीय स्तर पर भी उतनी ही प्रभावी है। तमिल फिल्म 'दशावतारम' या कमल हासन की 'विश्वरूपम' को लेकर हुआ विवाद इसका सटीक उदाहरण है, जहां धार्मिक भावनाओं के आहत होने के आधार पर राज्य सरकार ने फिल्म के प्रदर्शन को अधर में लटका दिया था। विवेक अग्निहोत्री की 'द कश्मीर फाइल्स' और सुदीप्तो सेन की 'द केरला स्टोरी' जैसी फिल्मों को जहां कुछ राज्यों में कर-मुक्त किया गया, वहीं कुछ अन्य राज्यों में इन पर अघोषित प्रतिबंध लगाने की कोशिश की गई। यह विरोधाभास साबित करता है कि सिनेमा अब केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि राजनीतिक ध्रुवीकरण का एक प्रमुख हथियार और शिकार दोनों बन गया।

'सतलुज' जैसी फिल्मों का डिजिटल प्लेटफॉर्म से हटाया जाना इस बात का संकेत है कि अब कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए कोई सुरक्षित गलियारा नहीं बचा। राज्य का यह तर्क कि देश की एकता, अखंडता और सार्वजनिक शांति किसी भी रचनात्मक आजादी से ऊपर है, सिद्धांत रूप में सही हो सकता है। परंतु, इस तर्क की आड़ में असहमति की आवाजों को दबाना या इतिहास के कड़वे और असुविधाजनक पन्नों को पूरी तरह से फाड़ देना किसी भी जीवंत लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत नहीं है। सिनेमा केवल मनोरंजन या व्यावसायिक लाभ का जरिया नहीं है, बल्कि यह समाज के दबे हुए दर्द, ऐतिहासिक भूलों और मानवीय त्रासदियों को दर्ज करने का एक जीवंत दस्तावेज है। यदि किसी लोकतांत्रिक समाज या सरकार को किसी फिल्म के दृष्टिकोण से गंभीर आपत्ति है, तो उसका प्रतिकार करने का सही तरीका वैचारिक बहस, समीक्षाएं और स्वस्थ विमर्श होना चाहिए, न कि राज्य की दमनकारी शक्ति का उपयोग करके उस पर ताला लगा देना।

इतिहास इस बात का गवाह है कि कला पर थोपे गए प्रतिबंध कभी भी स्थायी नहीं रहे हैं। जो फिल्में अपने समय में प्रतिबंधित या प्रताड़ित की गई, वे कालांतर में सिनेमा की कालजयी कृतियां बनीं और दर्शकों तक पहुंचीं। आज के सूचना और संचार क्रांति के युग में, जहां तकनीक ने दुनिया को एक वैश्विक गांव में बदल दिया है, किसी भी विचार या कलाकृति को पूरी तरह से दबाना व्यावहारिक रूप से असंभव है। सरकारें फिल्मों पर तात्कालिक प्रतिबंध लगाकर राजनीतिक विवादों को कुछ समय के लिए भले ही टाल दें, लेकिन वे उस बुनियादी सवाल को नहीं टाल सकतीं जो कला की आजादी और लोकतंत्र की सेहत से जुड़ा है। एक परिपक्व और सुदृढ़ लोकतंत्र की वास्तविक पहचान इसमें है कि वह असुविधाजनक सच का सामना करने और उस पर खुले दिमाग से संवाद करने का साहस दिखाएं, न कि सच दिखाने वाले परदे को ही गिरा दे।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

जब परिंदों ने परदे पर प्रेम की भावनाओं को दी उड़ान

अशोक जोशी

हिंदी सिनेमा में पक्षी केवल प्रकृति की सुंदरता का हिस्सा नहीं रहे, बल्कि उन्होंने भावनाओं, प्रेम, स्वतंत्रता, विरह और उम्मीद के सबसे सशक्त प्रतीकों के रूप में भी अपनी पहचान बनाई है। कभी गीतों में

उनकी चहचहाहट गूंजी, कभी कथानक में उन्होंने संदेशवाहक की भूमिका निभाई और कभी फिल्म के शीर्षक बनकर दर्शकों की स्मृतियों में बस गए। बदलते दौर में भले ही तकनीक और प्रस्तुति का अंदाज बदल गया हो, लेकिन परिंदों की उड़ान आज भी हिंदी फिल्मों की संवेदनशील दुनिया का अभिन्न हिस्सा बनी हुई है।

खुले आसमान में उड़ते पक्षियों को देखकर मन में जो सहज प्रसन्नता जन्म लेती है, उसे हिंदी फिल्मों ने हमेशा बड़ी खूबसूरती से पर्दे पर उतारा है। प्रकृति ने जैसे मनुष्य, पशु-पक्षियों, नदियों और पर्वतों को अपनी अलग-अलग सुंदरता दी है, वैसे ही फिल्मकारों ने भी पक्षियों के माध्यम से मानवीय भावनाओं को अभिव्यक्ति देने का अनूठा प्रयास किया। यही कारण है कि हिंदी सिनेमा के लंबे इतिहास में दर्जनों फिल्मों और गीतों में पक्षियों की मौजूदगी बार-बार दिखाई देती है।

फिल्मों के शुरुआती दौर में पक्षियों का इस्तेमाल केवल दृश्य सजावट के लिए नहीं, बल्कि गहरे प्रतीक के रूप में किया जाता था। यदि कोई नायिका अत्याचार सह रही होती या किसी कैद में होती, तो पिंजरे में फड़फड़ाते पक्षियों का दृश्य उसकी बेबसी को और अधिक प्रभावशाली बना देता था। उस दौर में जब परदे पर प्रेम प्रदर्शन की सीमाएं थीं और चुंबन जैसे दृश्य दिखाना सहज नहीं माना जाता था, तब दो पक्षियों का एक-दूसरे के करीब आना या चोंच मिलाना नायक-नायिका के प्रेम का सांकेतिक चित्र बन जाता था। इसी तरह जब कोई पात्र जेल से रिहा होकर खुली हवा में आता, तो आसमान में उड़ते पक्षी उसकी आजादी का प्रतीक बन जाते। प्रेम-पत्र पहुंचाने का जिम्मा भी अक्सर कबूतर या अन्य पक्षियों को सौंप दिया जाता था।

हिंदी फिल्मों में केवल तोता और मैना ही नहीं, बल्कि चिड़िया, कबूतर, कोयल, चकोर, बुलबुल, कौआ, मोर, पपीहा, हंस, चील, बाज और यहां तक कि उल्लू तथा चमगादड़ भी अपनी-अपनी भूमिकाओं में नजर आए। फैंटेसी फिल्मों में अक्सर यह कथा दिखाई जाती थी कि किसी राक्षस की जान तोते में कैद है और नायक उसी तोते को खोजकर खलनायक का अंत करता है। कई फिल्मों में हास्य या कल्पना के सहारे पात्रों को तोता या कबूतर बना दिया जाता था। वहीं डरावनी फिल्मों में उल्लू और चमगादड़ का उपयोग रहस्य और भय का वातावरण रचने के लिए किया गया। निर्देशक मनमोहन देसाई ने अपनी फिल्मों में बाज को बेहद प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। 'मर्द' और 'धरमवीर' जैसी फिल्मों में बाज केवल एक पक्षी नहीं रहा, बल्कि कहानी का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया। उसकी मौजूदगी ने इन फिल्मों के कई दृश्यों को यादगार बना दिया।

गीत-संगीत की दुनिया में भी पक्षियों का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। फिल्म चोरी-चोरी में नर्गिस का गीत 'पंछी बनूँ उड़ती फिरूँ मस्त गगन में' आज भी स्वतंत्रता और खुले जीवन का सबसे सुंदर फिल्मी प्रतीक माना जाता है। फिल्म मैं सुंदर हूं में लीना चंदावरकर 'ओ मिट्ठू मियां' गाकर युवावस्था की चंचलता को अभिव्यक्त करती हैं। फिल्म आंखें में 'मोरी अटरिया पर कागा बोले' सुनते हुए दर्शक समझ जाते हैं कि कौए की आवाज दरअसल प्रिय के आगमन की प्रतीक्षा का संकेत है। कौए को परंपरागत रूप से अपशकुन का प्रतीक माना जाता रहा है। लेकिन, निर्देशक सूरज बड़जात्या ने इस धारणा को बदल दिया। हम आपके हैं कौन में 'माई रे माई, मुंडेर पे तेरी बोल रहा है कागा' गीत के माध्यम से उन्होंने कौए को शुभ समाचार का दूत बना दिया। इसी तरह उनकी पहली फिल्म मैंने प्यार किया में कबूतर प्रेम का संदेशवाहक बनकर 'कबूतर जा... जा... जा' गीत में अमर हो गया।

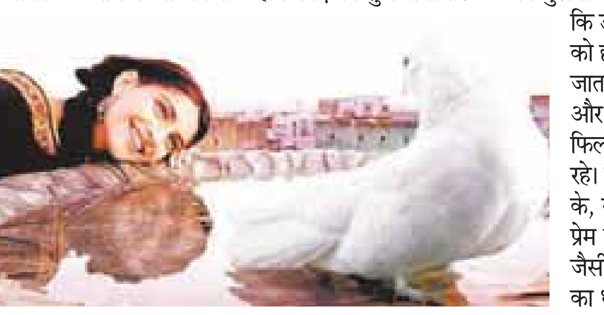

हिंदी फिल्मों की कल्पनाशीलता का एक दिलचस्प उदाहरण 'सरगम' है, जिसमें गूंगी नायिका भी 'कोयल बोली दुनिया डोली' गाती नजर आती है। बाद में बेटा फिल्म में 'कोयल सी तेरी बोली' के जरिए नायिका की मधुर आवाज की तुलना कोयल से की गई। संयोग यह भी है कि उस दौर में लता मंगेशकर की आवाज को ही कोयल की मधुरता का पर्याय माना जाता था। पक्षियों का प्रभाव केवल गीतों और दृश्यों तक सीमित नहीं रहा। कई फिल्मों के शीर्षक भी इन्हीं पर आधारित रहे। सोने की चिड़िया, हम पंछी एक डाल के, सफेद कबूतर, मोरनी, तोता-मैना की प्रेम कहानी और 'झूठ बोले कौआ काटे' जैसी फिल्मों ने अपने नाम से ही दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया। इतना ही नहीं, निर्माता एफसी मेहरा की फिल्म निर्माण संस्था का नाम 'ईगल फिल्म्स' था, जिसकी पहचान एक उड़ती हुई चील के प्रतीक से होती थी। दक्षिण भारत की प्रसिद्ध पक्षीराज फिल्म्स ने भी अनेक सफल फिल्मों का निर्माण कर अपने नाम को सार्थक किया।

फिल्मी गीतों की सूची देखें तो लगता है मानो पूरा पक्षी संसार हिंदी सिनेमा में उतर आया हो। पंछी रे ओ पंछी, पंछी हूं मैं उस नभ का, चल उड़ जा रे पंछी, नन्हा सा पंछी है तू, तोता-मैना की कहानी, एक था गुल और एक थी बुलबुल, कैद में है बुलबुल, मोरे मन का बावरा पंछी, हम पंछी एक डाल के, प्यासे पंछी नील गगन पर, चूं-चूं करती आई चिड़िया, जंगल में मोर नाचा, उड़ जा काले कावां, झूठ बोले कौआ काटे, मोरनी बागा में बोले, कागा रे जा रे जा, कुहू-कुहू बोले कोयलिया, पीहू-पीहू पपीहे, बोले रे पपीहरा, बन के पंछी गाए प्यार का तराना, जहां डाल-डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा, एक डाल पर तोता बोले, एक डाल पर मैना, ओ मेरी मैना, दो हंसों का जोड़ा बिछड़ गयो रे, कोयल बोली दुनिया डोली, चलत मुसाफिर मोह लियो रे पिंजरे वाली मुनिया और 'कबूतर जा जा जा' जैसे गीत आज भी संगीत प्रेमियों की जुबान पर हैं।

हिंदी सिनेमा का यह पक्ष बताता है कि फिल्मकारों ने पक्षियों को केवल प्रकृति का हिस्सा नहीं माना, बल्कि उन्हें भावनाओं की भाषा बना दिया। कभी वे प्रेम के संदेशवाहक बने, कभी आजादी का प्रतीक, कभी विरह की पीड़ा के साथी और कभी उम्मीद की नई उड़ान। बदलते समय में भले ही फिल्मों की शैली बदल गई हो, लेकिन परिंदों की यह उड़ान आज भी हिंदी सिनेमा की सबसे खूबसूरत और संवेदनशील स्मृतियों में शामिल है।

अहम सवाल, सोनम वांगचुक अब क्या करेंगे ?

राइट क्लिक

अजय बोकिल

जैसी की संभावना थी, वही हुआ। दिल्ली के जंतर मंतर पर 20 दिनों से आमरण अनशन पर बैठे सामाजिक एवं पर्यावरण कार्यकर्ता (एक्टिविस्ट), सोनम वांगचुक को शनिवार तड़के पुलिस जबरन उठा ले गई और उनकी बिगड़ती हालत के मद्देनजर सफदरजंग अस्पताल में भर्ती करा दिया। पुलिस ने वहां जुटे प्रदर्शनकारियों को भी चलता किया। हालांकि सोनम की जगह कॉकरोच जनता पार्टी के संयोजक अभिजीत दिपके अब अनशन पर बैठ गए हैं, लेकिन फिलहाल इस आंदोलन के भविष्य पर प्रश्न चिन्ह लग गया है और सोनम वांगचुक द्वारा 20 जुलाई का प्रस्तावित मार्च भी खटाई में पड़ गया है। लद्दाख के मूल निवासी सोनम की सरकार से यूं तो कई मांगें हैं, लेकिन मुख्ये रूप से वो नीट परीक्षा में घोटाले के लिए केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान से इस्तीफा और प्रतियोगी परीक्षा प्रणाली में सुधार प्रमुख हैं। सोनम के ताजा आंदोलन के औचित्य, टाइमिंग, उसके सामाजिक राजनीतिक असर और सरकार के रवैये को लेकर मोटे तौर पर दो अलग-अलग राये हैं। पहले वर्ग का मानना है कि सरकार को निष्ठुरता और बेरूखी दिखाने के बजाए सोनम की मांगों पर संवेदनशीलता से विचार और संवाद करना चाहिए। क्योंकि सोनम जो कर रहे हैं, वो विरोध का गांधीवादी तरीका है और लोकतंत्र में इसका समुचित सम्मान होना चाहिए। दूसरे वर्ग का मानना है कि सोनम की मांगें ऐसी नहीं हैं कि जिसकी खातिर वो अपनी जान की बाजी लगा दें। उनकी मांग मुख्य तौर पर व्यवस्था सुधार से जुड़ी हैं, उसे मनवाने और सरकार पर समुचित दबाव बनाने के लिए अनशन की जगह सड़कों पर संगठित आंदोलन ज्यादा कारगर होता। वैसे भी वर्तमान सरकार ऐसे आंदोलनों के दबाव में नहीं आती। लिहाजा आमरण अनशन से निजी शोहरत और सहानुभूति तो मिल सकती है, जमीनी लाभ नैतिक समर्थन से ज्यादा कुछ नहीं मिलता। व्यावहारिक दृष्टि से भी सोनम के आंदोलन के पीछे कई राजनीतिक और सामाजिक पेंच हैं। कुछ सियासी पार्टियों ने सोनम का अब तक जबानी समर्थन किया है, तो कांग्रेस जैसी सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी शुरू से ही इसे संदेह की नजर से देखते हुए आंदोलन से दूरी बनाए हुए है। और तो और जिन युवाओं की खातिर सोनम आमरण अनशन कर रहे हैं, उनकी रूचि भी इस आंदोलन में ज्यादा नहीं दिखती। यानी परीक्षाओं में गड़बड़ी को लेकर उनके मन में भी रोष तो है, लेकिन वह इतना भी नहीं है कि वो अपनी वर्च्यूअल दुनिया छोड़कर वास्तविक दुनिया में कफन बांध कर उतर आएं। सोनम के साथ मैदानी तौर पर वो सीजेपी है, जिसका खुद का वजूद भी वर्च्युअल ही ज्यादा है। जबकि तमाम एआई और डिजीटल प्रगति के बावजूद हकीकत में जन आंदोलन सड़कों पर ही करने पड़ते हैं। उसमे भी निरंतरता चाहिए न कि जेन जी तरह एक टेम्प्रेरी इंवेट का क्रेज। वैसे भी आंदोलनों के मामले से निपटने का मोदी सरकार का तरीका पूर्ववर्ती सरकारों की तुलना में काफी भिन्न है, जिस पर बहस की गुंजाइश हमेशा रही है। मसलन सरकार ने अगर किसी आंदोलन को ढील दी हो या अचानक अपने कदम पीछे खींच लिए हो, तो जो आगे होता है, वह राजनीतिक लाभ-हानि के तहत ही होता है। और इतनी सफाई और बेरहमी से होता है कि उन आंदोलनो का अपेक्षित चुनावी लाभ विपक्षी पार्टियों को नहीं मिल पाता।

बावजूद तमाम नैतिक समर्थन, सहानुभूति और संवेदनशीलता के आग्रह के, सोनम वांगचुक का आंदोलन भी उसी दिशा में जाता दिख रहा है। इसके पहले दिल्ली हाईकोर्ट और डॉक्टरों ने भी भूख हड़ताल पर बैठे सोनम की गिरती सेहत को लेकर गहरी चिंता जताते हुए उनका ध्यान रखने की हिदायत दी थी। शनिवार सुबह हुई पुलिस कार्रवाई में भी इसी को आधार बनाया गया। पुलिस कर्मी सादे पकड़ो में पहुंचे और सोनम को उठा ले गए। हालांकि सीजेपी नेता अभिजीत दिपके ने पुलिस पर आंदोलनकारियों पर लाठी चार्ज करने का आरोप लगाया। इस कार्रवाई के एक दिन पहले ही दिल्ली के पुलिस कमिश्नर को भी बदल दिया गया था। गौरतलब है कि जंतर मंतर पर इस आंदोलन की शुरुआत अभिजीत दिपके ने की थी और सोनम वांगचुक इसमे 28 जून को शामिल हुए थे। कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित सोनम वांगचुक के आंदोलन में शामिल होने के बाद इसे अंतरराष्ट्रीय मीडिया में भी सुर्खी मिलने लगी। अमेरिका के न्यूयॉर्क टाइम्स ने लिखा है कि लाखों भारतीय छात्रों के लिए न्याय की मांग कर रहे युवाओं के आंदोलन को वांगचुक की भूख हड़ताल से नई गति मिली है। इसी अखबार को दिए इंटरव्यू में सोनम ने कहा कि सीजेपी का आंदोलन उस संघर्ष से जुड़ा हुआ है, जिसे मैंने अपनी युवावस्था में शुरू किया था। यह भी उल्लेखनीय है कि 'आमरण अनशन के दौरान सोनम का वजन साढ़े 9 किलो तक कम हो गया है। लिहाजा कई नेताओ, सामाजिक कार्यकर्ताओंऔर कलाकारों ने सोनम से अनशन समाप्त करने की अपील भी की।

जहां तक सोनम के वर्तमान आंदोलन की बात है तो उसको लेकर कई सवाल हैं। पहला तो यह कि सोनम केन्द्रीय शिक्षा मंत्री से जो इस्तीफा मांग रहे हैं, वह राजनीतिक मांग है। सो सरकार शायद ही माने। उनकी प्रतियोगी परीक्षाओं में पेपर लीक बंद करने और व्यवस्थाओं को पुख्ता बनाने की मांग जायज है, लेकिन जिस 'नीट' यूजी के संदर्भ में वो ये मांग कर रहे हैं, उसकी तो पुनर्परीक्षा भी हो गई तथा रिजल्ट भी घोषित हो गया। रीएग्जाम में व्यवस्थाएं पुख्ताो रहीं और नतीजों को सभी ने स्वीकार किया। साथ ही सीबीएसई बोर्ड परीक्षा में ऑन लाइन मार्किंग को लेकर हुआ विवाद भी हल हो गया है। ऐसे में दूसरी मांग का महत्व केवल सैद्धांतिक ही रह जाता है। इसी तरह देश में भ्रष्टाचार, महंगाई, बेरोजगारी, किसानों की समस्याएं जैसे स्थायी मुद्दे हैं, लेकिन उनको लेकर भी कोई बड़ा आंदोलन (किसान आंदोलन छोड़ दें) तो अन्ना आंदोलन के बाद बीते डेढ़ दशक में खड़ा नहीं हो सका है। दूसरे, पेपर लीक मामले के भुक्त भोगी युवा भी अगर सोनम के आंदोलन से ज्यादा नहीं जुड़ रहे तो इस आंदोलन के औचित्य पर उन्हें पुनर्विचार करना चाहिए। वैसे भी आज के जमाने में किसी भी मुद्दे पर युवाओं को सड़कों तक खींच लाना शिव धनुष उठाने जैसी चुनौती है। क्योंकि युवाओं की समस्याएं भले ही जायज और पुरानी हो, लेकिन विचार और एप्रोच की दृष्टि बहुत एकाकी और आत्मकेन्द्रित है। सत्ता और व्यवस्था परिवर्तन जैसे बड़े उद्देश्यों के लिए व्यापक आंदोलन की खातिर समुचित भीड़ जुटाना अब टेढ़ी खीर है, खासकर उस पीढ़ी से जो आपसी संवाद, प्रेम और नफरत भी व्हाट्सएप मैसेजों और सोशल मीडिया के जरिए करती हो। विपक्षी पार्टियों ने भी सोनम के आंदोलन को जबानी समर्थन इस सावधानी के साथ दिया कि कहीं इसका श्रेय सोनम अकेले न ले जाएं। बहुत से बुद्धिजीवियों में सोनम के आंदोलन को लेकर कुछ ज्यादा ही संवेदना थी। एक पत्रेकार ने इस मुद्दे पर आम लोगों की निर्लिप्तता पर क्षुब्ध होकर लिखा कि आज की पीढ़ी को 'सोनम रघुवंशी चाहिए, सोनम वांगचुक नहीं।' यह अपने आप में प्रतीकात्मक बात थी। अलबत्ता सोनम के समर्थन में कुछ मशहूर हस्तियों की सोशल मीडिया पोस्ट देखने को मिलीं, जिससे कुछ खास बनना बिगड़ना नहीं था। शायद सरकार को भी इस आंदोलन की गहराई का पूरा अंदाजा था, इसलिए उसने शुरू में उसे अनदेखा किया और पानी सिर से गुजरते ही सोनम को अस्पताल पहुंचा दिया। अब आगे इस आंदोलन को फिर से जिंदा करना आसान नहीं है। संभव है कि सरकार की नजर में 'आंदोलनजीवी' सोनम? फिर कोई नया मुद्दा लेकर फिर अनशन पर बैठ जाएं। इसी संदर्भ में एक अहम बात अभिनेता आमिर खान का स्पष्टीकरण है। आमिर ने सोनम के आंदोलन का समर्थन तो किया, साथ में यह भी कहा कि उनकी हिट फिल्म 'थ्री इडियट्स' का चर्चित पात्र 'रेंचो' (फुनसुख वांगडू) सोनम वांगचुक से प्रेरित नहीं था। अभी तक यही माना जाता रहा है कि उस चरित्र के पीछे प्रेरणा सोनम वांगचुक थे। आमिर ने यह सफाई अभी क्यों दी, यह भी बड़ा सवाल है।

वैसे सोनम पहले भी आमरण अनशन करते रहे हैं। इस मामले में उनकी तुलना महाराष्ट्र के मनोज जरांगे से की जा सकती है, जो हर दो-चार महीने में मराठा आरक्षण को लेकर आमरण अनशन शुरू कर देते हैं, लेकिन राजनीति के दुष्चक्र को अभी तक नहीं भेद पाए हैं। पिछले साल भी सोनम केन्द्र शासित प्रदेश लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्जा देने और राज्य में छठी अनुसूची लागू करने की मांग को लेकर गांधीवादी तरीके 15 दिनों तक क्रमिक अनशन पर बैठे थे। लेकिन बाद में आंदोलन के हिंसक होने से सोनम को अपना अनशन समाप्त करना पड़ा था। सरकार ने इस हिंसा के लिए वांगचुक को ही जिम्मेदार माना था।

दरअसल साठ वर्षीय सोनम वांगचुक को एक नवाचारी, पर्यावरणवादी और शिक्षा विद के रूप में जाना जाता है। उनके पिता भी पूर्व के जम्मू-कश्मीर राज्य में मंत्री रहे हैं। वो पेशे से इंजीनियर हैं और जनआंदोलन में अग्रणी रहे हैं। लेकिन जब से वो राजनीतिक आंदोलन में शामिल हुए हैं, सरकार के निशाने पर हैं। हालांकि वो हिम्मत हारने वालों में से नहीं है। देखने की बात यह है कि सोनम अब आगे क्या करते हैं और सरकार उनके साथ क्या सलूक करती है। सोनम वांगचुक की हालत पर दिल्ली हाईकोर्ट ने जताई चिंता

जिंदगी सलवार उतारे जाने का करो इंतजार

और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

मंटों की कहानी ''खोल दो फिर ज़ेहन में उतर आई। कहानी के संदर्भ में लेखक मंटो पर केस किया गया था कि वह अश्लील लिख रहे हैं। इसी तरह आप को लगेगा के मैंने एक स्त्री होकर इतना अश्लील शीर्षक दिया। आप ही कहें जिन्हें ये करने में अश्लीलता नहीं लगती मुझे लिखने में क्यों हो? कानून से जुड़े परिवार से हूँ। चारों तरफ से जज व वकीलों से घिरी हूँ। कानून का सम्मान भी करती हूँ। आज से 1 साल पहले भी यह समाचार सुना था, जब माननीय कोर्ट ने कहा था ''सलवार खोलना या शरीर पर हाथ फेरना दुष्कर्म की श्रेणी में नहीं आता है। मैंने उस बात पर एक छोटी सी नज़्म कहानी लिखी थी। मुझे नहीं पता उसे इतनी जल्दी पुनः दुहराने का वक्त आ जाएगा। नज्म कुछ यूँ थी-

नन्हीं को आजकल स्कूल में
'गुड टच, बेड टच' के बारे में सिखाया जा रहा है
माँ खुश है उसका जीवन संवारा जा रहा है
मुश्किल ये थी एक दिन में
जाने कितने लोग उसका बदन छूते थे
पिता, भाई, पडोसी, बस ड्राइवर, ट्यूटर
नन्ही अब सबका स्पर्श समझने लगी
ये सीख़ सबका आत्म विश्वास बढाने लगी
वो खुश थी ऐसी बातें वो घर आकर
मां-बाप को बता सकती है
बुलाने पर कानून, पुलिस,
उसकी मदद को आ सकती है
और वो भयानक दिन आ ही गया
जब ट्यूटर ने उसके बदन को हाथ लगाया
उसने सब बच्चों को जाने को कहा
नन्ही अकेली रह गई
सहेलियाँ आगे बढ़ गई
पर माँ ने कहा था अकेले मत रहना
उसने नन्ही का हाथ जोरों से पकड़ा था
नन्ही जी जान से हाथ छुड़ाने लगी
दरिंदे की उंगलियाँ
उसके शरीर पर रेंगने लगी
पूरी ताकत से हाथ छुड़ा
वो घर की तरफ दौड़ने लगी
दूर जा, घर से पहले,
फूट-फूट कर रोने लगी
नन्ही अब इस बात का
रोज़ शिकार होने लगी
जाने क्यों वो
अपराध बोध से भरने लगी
उसे लगा जो बात
उसके साथ हो रही है
उसे करने वाला
ज़रा भी भयभीत शर्मिंदा नहीं
तो क्या सारा कुसूर मेरा है?
और एक दिन, उस दरिंदे ने,
नन्ही की सलवार का नाड़ा
खोलने की कोशिश की
नन्ही का विवेक जागा
उसने पास पड़ा रूल
उसके सिर पर दे मारा
नन्ही हाथों से सलवार पकड़े
दौड़ पड़ी माँ की गोद में छुपने
घर में घुसते ही सुना पापा, माँ को
अखबार पढ़ सुना रहे थे
पेपर में लिखा था,

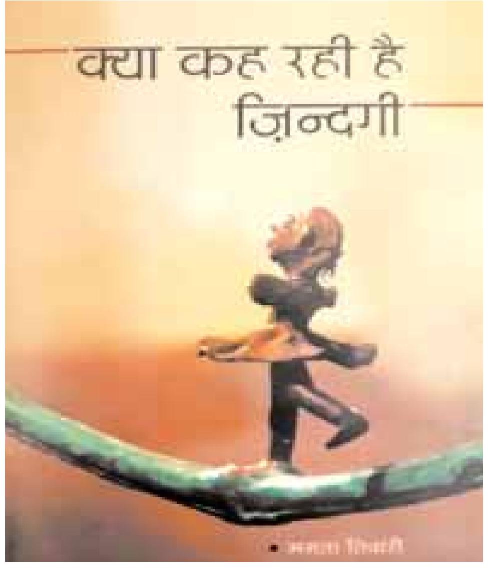

शरीर पर हाथ फेरना
नाड़ा खोलना
अपराध की श्रेणी में नहीं आता
माँ ने रोटी नन्ही को गले से लगा पूछा
तो क्या अब हम पुलिस के पास नहीं जा सकते?
दरिंदे को सजा नहीं दिला सकते?
मजबूर पिता ने
गुस्से में अखबार पटका, कहा
नहीं, हम अब नन्ही के
कपड़े उतरने का इंतजार करेंगे?

नहीं, यह कहना सही नहीं होगा कि सुप्रीम कोर्ट ने ऐसा फैसला दिया है। वास्तव में अभी जो खबर चर्चा में है, वह पटना हाईकोर्ट के एक फैसले से जुड़ी है, और सुप्रीम कोर्ट ने उसी फैसले पर गंभीर आपत्ति जताई है।

मामला यह है कि पटना हाई कोर्ट ने एक मामले में कहा कि महिला की सलवार उतारने का प्रयास करना और उसके स्तनों को दबाना, अपने आप में ''बलात्कार का प्रयास' सिद्ध करने के लिए पर्याप्त नहीं है, बल्कि यह महिला की लज्जा भंग का अपराध हो सकता है। इस फैसले की देशभर में आलोचना हुई। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने इस निर्णय पर कड़ी नाराजगी जताई और कहा कि इस तरह की सोच न्यायिक संवेदनशीलता के अनुरूप नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने इस तर्क पर सवाल उठाए हैं और मामले पर विचार किया है।

कानूनी स्थिति क्या है?

भारतीय कानून में तीन अलग-अलग बातें हैं:-

1. बलात्कार- इसकी कानूनी परिभाषा अलग है।

2. बलात्कार का प्रयास- यदि परिस्थितियों से यह साबित हो कि आरोपी का उद्देश्य बलात्कार करना था और उसने उस दिशा में ठोस कदम उठाए, तो यह अपराध बन सकता है।

3. यौन उत्पीड़न/लज्जा भंग- स्तनों को छूना, कपड़े उतारने का प्रयास करना आदि अपने आप में भी गंभीर अपराध हैं, भले किसी विशेष मामले में अदालत उन्हें 'बलात्कार का प्रयास' न माने।

इसलिए यह कहना कि 'सलवार खोलना और छाती पर हाथ फेरना अपराध नहीं है' बिल्कुल गलत है। ऐसे कृत्य भारतीय कानून के तहत गंभीर दंडनीय अपराध हैं। विवाद केवल इस बात पर है कि किसी विशेष मामले के तथ्यों के आधार पर उसे 'बलात्कार का प्रयास' माना जाए या किसी अन्य यौन अपराध के रूप किसी महिला के कपड़े उतारने का प्रयास करना, उसकी इच्छा के विरुद्ध उसके शरीर के संवेदनशील अंगों को छूना या उसके साथ जबरदस्ती करना स्वयं में एक गंभीर अपराध है। अदालत में विवाद इस बात पर हो सकता है कि उसे 'बलात्कार', 'बलात्कार का प्रयास' या 'यौन उत्पीड़न' की किस कानूनी धारा के अंतर्गत रखा जाए, लेकिन यह कहना कि ऐसा करना अपराध नहीं है, पूरी तरह गलत है।

इस बात को सरल शब्दों में यूं समझिए कि कोई व्यक्ति किसी महिला को पकड़कर उसकी सलवार उतारने की कोशिश करता है और उसके स्तनों को दबाता है। अब दो प्रश्न उठते हैं, पहलाः क्या उसने महिला के साथ गंभीर यौन अपराध किया? उत्तरः हाँ, बिल्कुल। इसमें कोई विवाद नहीं है। दूसरा सवालख् क्या इसे 'बलात्कार का प्रयास' कहा जाएगा? यहीं से कानूनी बहस शुरू होती है।

कुछ न्यायालय यह देखते हैं कि क्या आरोपी का उद्देश्य वास्तव में बलात्कार करना था और क्या उसने उस दिशा में ऐसे ठोस कदम उठाए जिनसे अपराध लगभग पूरा होने वाला था। यदि ऐसा प्रमाणित न हो सके, तो अदालत इसे 'यौन उत्पीड़न' या 'महिला की लज्जा भंग' जैसे अपराधों की श्रेणी में रख सकती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि आरोपी निर्दोष है।

सुप्रीम कोर्ट की चिंता क्या है?

सुप्रीम कोर्ट की चिंता यह है कि अदालतों की भाषा ऐसी नहीं होनी चाहिए जिससे समाज में यह संदेश जाए कि महिलाओं के साथ इस प्रकार की जबरदस्ती कोई मामूली बात है। न्याय केवल कानून की धाराओं का नाम तय करना नहीं है, बल्कि पीड़िता की गरिमा और समाज के विश्वास की रक्षा करना भी है। इसलिए सुप्रीम कोर्ट ने इस फैसले की भाषा और उसके प्रभाव पर गंभीर आपत्ति जताई है। यह तय कर सकती है कि अपराध किस धारा में आएगा, लेकिन समाज को यह भ्रम कभी नहीं होना चाहिए कि किसी महिला के कपड़े उतारने का प्रयास या उसके शरीर से जबरदस्ती करना सामान्य या कम गंभीर अपराध है। न्याय की असली कसौटी केवल कानून की व्याख्या नहीं, बल्कि पीड़िता की गरिमा की रक्षा भी है। जब न्यायालयों के शब्द समाज तक पहुँचते हैं, तो वे केवल फैसला नहीं सुनाते, बल्कि समाज की सोच भी गढ़ते हैं। इसलिए न्यायिक भाषा जितनी कानूनी हो, उतनी ही संवेदनशील भी होनी चाहिए। आज तो बस यही कह रही है ज़िंदगी।

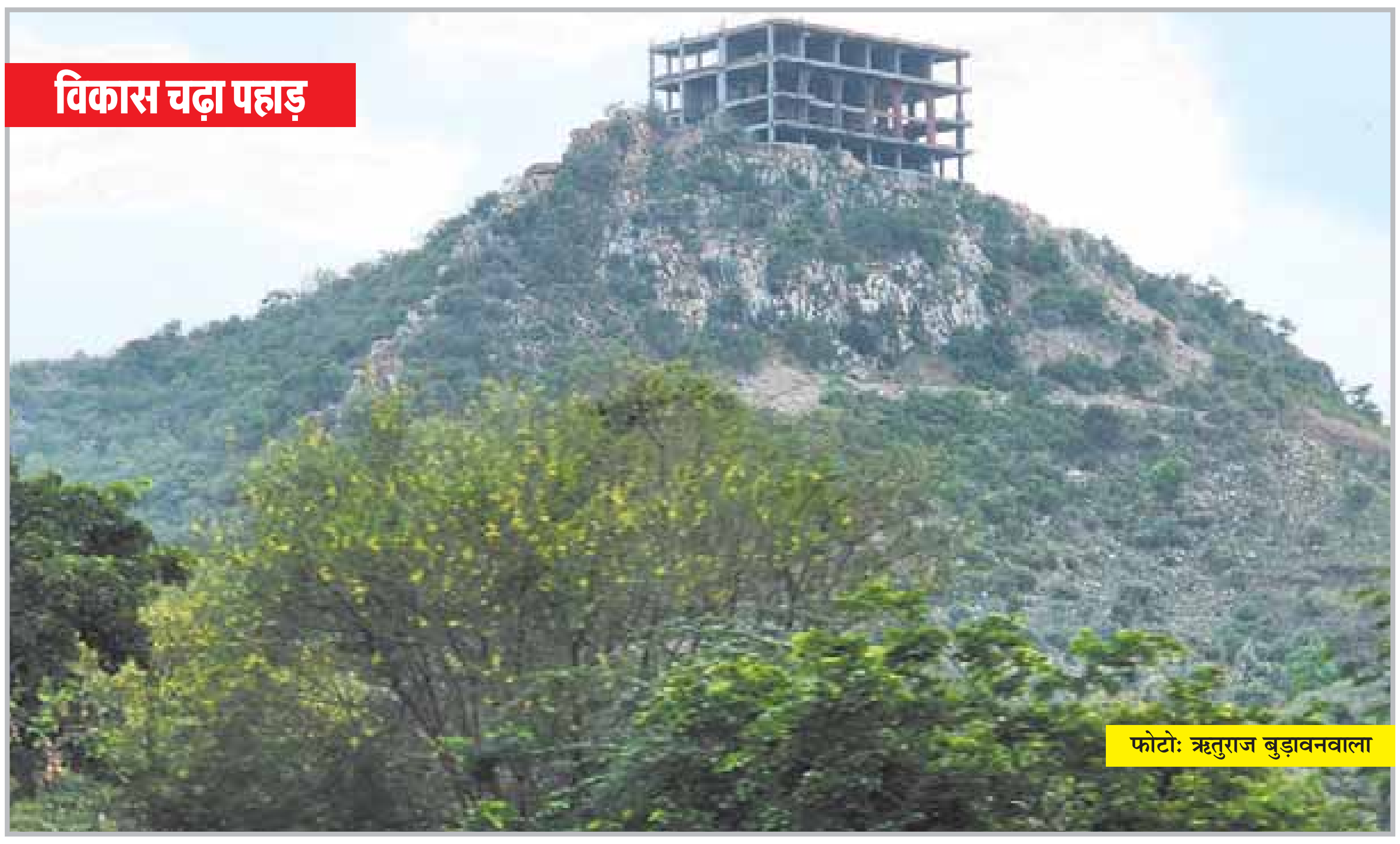

फोटोः ऋतुराज बुड़ावनवाला

दृष्टिकोण

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

ऑन-लाइन से बे-पटरी जिंदगी... !

बच्चों में स्मार्टफोन लत ऐसे दौर में है, अगर कुछ नहीं किया तो आने वाली पीढ़ी हमसे ही सवाल करेगी। इंग्लैंड में इस खतरे से जागरूक हो रहे हैं। बच्चों के डॉक्टर ज्यादा परेशान हैं। स्मार्टफोन युवाओं के दिमाग पर बुरा असर डाल रहा है। क्लिनिक में आने वाले दस बरस से ज्यादा उम्र के बच्चों के पास स्मार्टफोन है। मरीजों का बड़ा हिस्सा ऐसी दिक्कत का सामना कर रहा है, जो टेक्नोलॉजी से जुड़ी हैं या उससे और बढ़ गई है।

सोशल मीडिया के ज्यादा इस्तेमाल, स्क्रीन की लत या बच्चों के ऑनलाइन यौन शोषण से बच्चों में गंभीर दिमागी बीमारी हो रही है। बच्चे ऑनलाइन दुनिया में खो जाते हैं, नींद नहीं आती, ज्यादा ध्यान नहीं दे पाते और बिना सोचे-समझे काम करते हैं। गुस्सैल और चिड़चिड़े हो जाते हैं। ऐसे बच्चे एंग्जायटी या कुछ छूट जाने के डर से परेशान हैं। घंटों अकेले बिताते हैं, चाहने वालों से दूर रहते हैं और अजनबियों से घंटों बातें करते हैं।

बच्चे और युवा साथियों के ग्रुप से सहारा और बातों को सही ठहराने की कोशिश करते हैं। दुःख की बात है कि इनमें से कुछ ग्रुप खुद को नुकसान पहुंचाने, खाने-पीने से जुड़ी बीमारियों और आत्महत्या तक के लिए भी उकसाते हैं। बच्चों का आत्म-सम्मान और खुद के बारे में उनकी सोच भी खत्म होती जा रही है। डिप्रेशन और आत्महत्या के विचार कहीं ज्यादा हैं। डॉक्टर भी जानते हैं कि स्मार्टफोन के इस्तेमाल और असल जिंदगी में होने वाले नुकसान के बीच सीधा संबंध है।

लंदन में बारस बरस का बच्चा हफ्ते में उनतीस घंटे (पार्ट-टाइम नौकरी के बराबर) फोन पर बिताता है। इतनी कम उम्र में दिमागी विकास पर बुरा असर हो रहा है। पहले जहां हर हफ्ते दिमागी बीमारी के कुछ ही मामले मिलते थे, अब बाढ़ है। माता-पिता भी बच्चों को सुला नहीं पाते या उन्हें बिठा नहीं पाते। उन्हें स्कूल में ध्यान लगाने में मुश्किल है और पढ़ाई-लिखाई पर बुरा असर है।

जब से इंसान की जिंदगी ऑनलाइन हुई है, तब से हमारे 'ध्यान' पर असर हुआ है। दिमाग

बदल रहे हैं और बच्चे भी इससे दूर नहीं हैं। युवा तेजी से अकेले और सिमट रहे हैं। बच्चों और नई पीढ़ी के दोस्तों के साथ बिताए जाने में पैंसठ फीसद की गिरावट है। किशोरावस्था में सामाजिक 'समूह की सोच' वाला दौर आता रहा है। पहले इसका मतलब ॥द्दटबॉल टीम में शामिल होने या दोस्तों के साथ बाहर जाने का दबाव हो सकता था, लेकिन अब यह मेल-जोल वाट्सएप ग्रुप और सोशल मीडिया पर हो रहा है, जिसके नतीजे डरावने हैं।

कमजोर बच्चे, जिनके कक्षा में ज्यादा दोस्त नहीं होते, ऑनलाइन का लालच नशीला है, भले ही इसका मतलब किसी बेहद खतरनाक चीज में भाग लेना हो। सोशल मीडिया से जुड़े बच्चों की आत्महत्या के कई बड़े मामले सामने आए हैं।

हमें जल्दी से जल्दी इस समस्या पर काम करने की जरूरत है। स्मार्टफोन मुक्त बचपन जैसे अभियान माता-पिता को बच्चों की भलाई के लिए फैसला लेने के लिए हैं, लेकिन अब राज्य को भी दखल देना होगा। युवाओं के साथ जो हो रहा है, उसके लिए सरकार जागेगी और इन कठोर फैसलों को हमारे हाथ से वापस ले लेगी, ऐसी उम्मीद है।